कलियुग ।

आनन्द प्रसाद खत्री ।

श्री शिवाय नमः ।

* कलियुग नाटक *

लेखक

बाबू आनन्द प्रसाद खत्री
डाइरेक्टर नागरी नाटक मण्डली ।

प्रकाशक

बाबू जगमोहन दास साह

गोर्खा यन्त्रालय काशी ।

मूल्य ।=)) (प्रथम आवृति १००

1912.

भूमिका ।

मुझसे पहिले बहुत से मेरे मित्र अथवा हिन्दी प्रेमी यही कहते थे कि कोई ऐसा नाटक हिन्दी में लिखो जो सर्व सज्जन को प्रिय हो । परन्तु मैं सदा इसी बात को सोचता रहा कि आज कल तो पार्सी ड्रामा चला है फिर हिन्दी नाटक लोगों को कैसे प्रिय होगा । थोड़े दिन पश्चात मैंने यही बिचारा कि ऐसा नाटक कोई अवश्य लिखना चाहिये जिसकी भाषा तो हिन्दी हो पर उसकी शैली पार्सी की हो उसी समय मेरे एक मित्र ने इंगलैन्ड के विख्यात कवि गुरु शेक्स-पियर के किंगलियर नामक नाटक का स्मर्ण कराया मैंने तत्कालही उसका लिखना आरम्भ करदिया । नागरी नाटक मंडली उसी नाटक को खेलना चाहती थी इस कारण मैंने बड़ी शीघ्रता से इस कार्य को पूरा किया और आज आप लोगों के सामने रखता हूं । यह नाटक पार्सी स्टाइल पर लिखा गया है परन्तु हिन्दी में है । नाटक बनाने में तो मुझे केवल पुस्तकों ही से सहायता मिली है परन्तु जो बाहरी सहायता और सज्जनों ने पहुंचाई है उसके हेतु मैं उन महानुभावों को हृदय से धन्यवाद देता हूं । साथही मैं बाः जगमोहन दास साह का अत्यन्त अनु-ग्रहित हूं जिन्हो ने इसको प्रकाशित करने का कष्ट उठाया है । यदि इस में किसी प्रकार की त्रुटि रहगई होतो पाठक मुझे क्षमा करेंगे ॥

विनीत- आनन्द प्रसाद खत्री ।

मंगलाचरण।

सूत्रधार, पारिपार्श्वक

बन्दना- डमरू हर कर बाजे ॥ भस्म अङ्ग भुजङ्ग भूषण व्याल माला गले विराजे ॥ डमरू० ॥ पंच बदन पिनाक हर धर वृषभ बाहन भूतनाथ, रुण्ड कुण्डल श्रवण सोहै अनादि पुरुष अनन्त हर हर ॥

सूत्र। आजकी रात्रि भी धन्यहै कि इतने गुणज्ञ और रसिक लोग एकत्र हैं और सबकी इच्छा है कि आज कोई हिन्दी नाटक दिखाया जाय अच्छा मित्र तुम्हीं आज बताओ कौन नाटक खेलें।

पारि:। आज तो कलियुग नामक नाटक खेलने की बड़ी इच्छा कर रही है।

सूत्र:। परन्तु कदाचित यह उपस्थित सज्जनों को अच्छा नलगे।

पारि:। क्यों कारण।

सूत्र। कारण यही है कि यद्यपि यह नाटक हिन्दी में है पर शैली इसकी पार्सियों कीसी है।

पारि। इससे क्या होता है अच्छी चीज सबमे लेकर अपना करलेना चाहिये।

सूत्र। पर कदाचित इसपर लोग कुछ कटाक्ष करैं।

पारि। यही तो हमारी भूल है यदि पार्सियों की अच्छी बात लेकर हमलोग काम करते होते तो आज हिमालय से कन्याकुमारी तक हिन्दीही हिन्दी दिखाई पड़ती।

सूत्र। मित्रवर तुमने परामर्श तो अच्छा दिया चलो फिर चलें। (प्रस्थान)

कलियुग नाटक में नये गाने ।

पृष्ठ पहिले में आनन्द सिंह का

गाना ।

हे प्रभुकी महिमा बडी लीला मन मोह खडी ।
मगन सबजी सुफल घडी-"आनन्द" गांव प्यारा है ॥
हम सब अब सुधि बिसार-हिलमिल करें शारबार ।
नित बहार तेरो प्यार-कैसो यह सुख न्यारा है ॥

पृष्ठ दूसरे मे माधवी का ।

गाना ।

हे प्राणों से प्यारे हमारे पिता-तोपे तनमन धन वार निछावर कियो
राज वाला ताज वाला मेरा प्यारा हां-
सब सुख की खान वाला- हां २

पृष्ठ तीसरे में कमला का

गाना ।

हृदय में तनिक सोच विचार तो लेहु
खोटु कारी तजि देहु-
बिना विचारे जो करे-सो पीछे पछताय
काम बिगाडे आपनो-जगमें होत हसाय

पृष्ठ ४१ में आनन्द सिंह के गाने के पश्चात- वीरेन्द्रसिंह का

गाना ।

गरीबी तूहै नागिन काली
फंदे में तेरे जो कोई आया
काली है कमरी डाली
जब तक माया पासथी--तबतक थी सब प्रीति
हो गये खाली हाथ जब--कर गये प्रीति अनरीति
सब जग को अपनी पडी--कोउ न देवे साथ
अब तो हमरी नाथ है नाथ तुम्हारे हाथ, गरीबी

पृष्ठ ५२ में वेश्याओ के गाने के बदले दुसरा

गाना ।

गाना ।

छैला न दो मोहे गाली मै नाजों पाली
मैं फूलों कैसी डालीरे हूं नाजों पाली
छेड छाड को जगमें ढूंढो
और कोई मतवाली मैनाजो पाली-छैलो

सिपाहियों का गाना ।

पटेल भैया बीरो पटेल भैया हो
दोनो लुगइअन से व्याह रचाय
ओढे दुलैया सरदी भाग जायरे
तक २ के मारे नजरिया राम-दूनो
पाव मे पैजानिया झमक झमकावै
घोडवा पै चढ़के विवाह के जाय-दूनो

* ॥ श्रीः ॥ *

❀ कलियुग नाटक ❀

दृश्य पहिला-दरबार

आनन्द। सावन आयोरी सखीरी घन उमड़ि आयो घटा। मोर नाचत मगन ह्वै सब का ही चितवां पर बटा। बोलती कूकों से कोयल जैसे स्वागत करत हैं, दृष्टि गोचर वां पड़े ज्यों कामिनी बैठी अटा॥

(माधवी का अपने पति के साथ आना। आनन्द से हाथ मिलाने बाद बैठना। तारा का पति के साथ आना और बैठ जाना। कमला का भी पति के साथ आना और बैठ जाना। राजमंत्री का आना। पुनः महाराज सुरेन्द्रसिंह का आकर सिंहासन को सुशोभित करना।)

सुरेन्द्रसिंह। हे प्रभो! मैं कहांतक आपका गुणानुवाद करूं। आपकी महिमा अपार है। आपही की कृपा से आज मैं इस वृद्धावस्था में भी राज सिंहासन पर आरूढ़ हूं यहां की आने जाने वाली वस्तुयें भी देखी। जो जाके न आये वो युवा अवस्था देखा जो जाके न आये वह वृद्धा अवस्था देखी। परन्तु अब बुढापे ने आ घेरा है। थोड़े समय में मेरे यहां से प्राणों का फेरा

बिदा होने के पहिले इस राज्य को सच्चे उत्तराधिकारियों में बांट दूं। परन्तु इसके पहिले मेरे बूढ़े कान यह बात सुनने की अभिलाषा रखते हैं कि मेरी पुत्रियों में हर एक को मुझसे कितना प्रेम है। अच्छा! माधवी तुम सब से बड़ी हो तुमहीं पहिले कहो।

माधवी। प्राण प्रिय पिताजी! यदि यह बात सत्य है कि सागर का जल किसी कूप में नहीं समा सकता तो यह भी सत्य ही जानिये कि मेरा प्रेम केवल मुख से ही नहीं प्रगट किया जासक्ता। पर हां मैं इससे अधिक और कुछ नहीं निवेदन कर सकती कि जितना प्रेम आप पर मेरा है उतना कोई अन्य पुत्री न तो अपने पिता से रखती थी, न रखती है और न रक्खेगी॥

कमला। आहि र.

सुरेन्द्र सिंह। ए मेरे नेत्रों की सहारा। माधवी चिरञ्जीव रहो। मेरे बूढ़े कान जिन वाक्यों को सुनने को उत्सुक थे तूने उन्हीं शब्दों को सुनाकर मेरे कानों को तृप्त कर दिया धन्य है वह पिता जिसने तेरे ऐसी पुत्री पाई है (तारा से) हां मेरी दुलारी अब है तेरी पारी।

तारा। महाराज! मैं भी उसी वस्तुओं से बनी हूं जिस से मेरी बड़ी बहिन। और उस के ही समान अपनी योग्यता समझती हूं। अपने शुद्धान्तःकरण से मैं अनुमान करती हूं कि उसने मेरी ही वास्तविकता का बखान श्रीमान् के सन्मुख किया है। अंतर केवल इतना ही है कि वह [illegible]

लूट सकते हैं और मैं केवल श्रीमान् की भक्ति ही में तृप्त हूं।

कमला (स्वगत) तो कमला दरिद्रिणी रही तथापि ऐसा नहीं है क्योंकि मुझको निश्चय है कि मेरा स्नेह मेरी जिह्वा की अपेक्षा अधिक धन गर्भित है॥

सुरेन्द्रसिंह। धन्य है ऐ पुत्री तू धन्य है। तूने मेरी आशाओं से भी अधिक कह सुनाई। (कमला से) हां बोल ऐ मेरे सुखों की जड़। मेरी अन्तिम और परम प्रिय लाड़ली। अब तेरी पारी है।

कमला। पिताजी मैं क्या बोलूं। सत्यता मुझसे कहती है कि तू चुप रह नहीं सकती परन्तु मेरा यह कहना है कि मैं कुछ कह नहीं सकती।

सुरेन्द्रसिंह। क्यों! बात करने में क्या हानि है और नहीं तो ईश्वर ने जिह्वा किस हेतु बनाई है॥

कमला। उसकी शक्ति और लीला की प्रशंसा करने के हेतु और कष्ट के समय उन कष्टों के वर्णन करने के हेतु बनाई है॥

सुरेन्द्रसिंह। ऐ कमला यह क्या? अपने वाक्यों को सुधार कदाचित् यह तेरे सौभाग्यों को धूलिमें मिलादे।

कमला। महाराज सत्य है। आपने मुझको जन्म दिया, पालन किया है। मैं भी अपने कर्त्तव्य और कर्म को यथायोग्य सम्पादन करती हूं। मैं आपकी आज्ञावर्त्तिनी, स्नेहानुरागिणी और पूर्णतया सन्मानकारिणी बनी हूं। यदि मेरी बहिनों का यह कथन है कि उनका सम्पूर्ण अनुराग श्रीमान् के पदों ही पर

बिदा होने के पहिले इस राज्य को सच्चे उत्तराधिकारियों में बांट दूं। परन्तु इसके पहिले मेरे बूढ़े कान यह बात सुनने की अभिलाषा रखते हैं कि मेरी पुत्रियों में हर एक को मुझसे कितना प्रेम है। अच्छा! माधवी तुम सब से बड़ी हो तुमहीं पहिले कहो।

माधवी। प्राण प्रिय पिताजी! यदि यह बात सत्य है कि सागर का जल किसी कूप में नहीं समा सकता तो यह भी सत्य ही जानिये कि मेरा प्रेम केवल मुख से ही नहीं प्रगट किया जासक्ता। पर हां मैं इससे अधिक और कुछ नहीं निवेदन कर सकती कि जितना प्रेम आप पर मेरा है उतना कोई अन्य पुत्री न तो अपने पिता से रखती थी, न रखती है और न रखेगी॥

कमला। आहि २.

सुरेन्द्र सिंह। ऐ मेरे नेत्रों की सहारा। माधवी चिरञ्जीव रहो। मेरे बूढ़े कान जिन वाक्यों को सुनने को उत्सुक थे तूने उन्हीं शब्दों को सुनाकर मेरे कानों को तृप्त कर दिया धन्य है वह पिता जिसने तेरे ऐसी पुत्री पाई है (तारा से) हां मेरी दुलारी अब है तेरी पारी।

तारा। महाराज! मैं भी उसी वस्तुओं से बनी हूं जिस से मेरी बड़ी बहिन। और उस ही के समान अपनी योग्यता समझती हूं। अपने शुद्धान्तःकरण से मैं अनुमान करती हूं कि उसने मेरी ही वास्तवता का बखान श्रीमान् के सन्मुख किया है। अंतर केवल इतना ही है कि वह भली प्रकार से न कह सकी। क्योंकि मैं अन्य सुखों से शत्रुता रखती हूं जिनको यह बहुमूल्य नेत्र

लूट सकते हैं और मैं केवल श्रीमान् की भक्ति ही में तृप्त हूं ।

कमला (स्वगत) तो कमला दरिद्रिणी रही तथापि ऐसा नहीं है क्योंकि मुझको निश्चय है कि मेरा स्नेह मेरी जिह्वा की अपेक्षा अधिक धन गर्भित है ॥

सुरेन्द्रसिंह । धन्य है ऐ पुत्री तू धन्य है। तूने मेरी आशाओं से भी अधिक कह सुनाई । (कमला से) हां बोल ऐ मेरे सुखों की जड़ । मेरी अन्तिम और परम प्रिय लाड़ली । अब तेरी पारी है ।

कमला । पिताजी मैं क्या बोलूं । सत्यता मुझसे कहती है कि तू चुप रह नहीं सकती परन्तु मेरा यह कहना है कि मैं कुछ कह नहीं सकती ।

सुरेन्द्रसिंह । क्यों ! बात करने में क्या हानि है और नहीं तो ईश्वर ने जिह्वा किस हेतु बनाई है ॥

कमला । उसकी शक्ति और लीला की प्रशंसा करने के हेतु और कष्ट के समय उन कष्टों के वर्णन करने के हेतु बनाई है ॥

सुरेन्द्रसिंह । ऐ कमला यह क्या? अपने वाक्यों को सुधार कदाचित् यह तेरे सौभाग्यों को धूलिमें मिलादे ।

कमला । महाराज सत्य है। आपने मुझको जन्म दिया, पालन किया है । मैं भी अपने कर्त्तव्य और कर्म को यथायोग्य सम्पादन करती हूं । मैं आपकी आज्ञावर्तिनी, स्नेहानुरागिणी और पूर्णतया सन्मानकारिणी बनी हूं । यदि मेरी बहिनों का यह कथन है कि उनका सम्पूर्ण अनुराग श्रीमान् के पदों ही पर अर्पित है तो उन्हां ने पतियों को क्यों रख छोड़ा है ?

हे वाल् जब मेरा विवाह होगा तो वह स्वामी जिसको मैं वरूँगी मेरे आधे प्रेम और मेरी आधी सेवा का अधिकारी होगा। मैं आप से उतनाही प्रेम रखती हूं जितना की एक पितृस्नेही पुत्री को अपने पिता से रखना चाहिये॥

सुरेन्द्रसिंह। ऐ लड़की! यह कैसी मूर्खता है? मुख से अच्छे और संतुष्ट दायक वाक्यों में तो एक अन्य पुरुष भी अपने प्रेम को वर्णन कर सकता है॥

कमला। तो अभी मालूम हुआ कि आप का हृदय सच्ची बातों से नहीं परंतु चाटुकारी से प्रेम रखता है॥

सुरेन्द्रसिंह। कमला! कमला!

कमला। प्रभो! प्रभो! सच्चे प्रेम को हृदय के तुला में रख कर तौलना चाहिये। सच्चा प्रेम जिह्वा की दूकान और बातों के हाट में नही मिलता है उसको हृदय के कोष में खोजना और जी की अंधेरी कोठरी में टटोलना चाहिये॥

सुरेन्द्रसिंह। इतनी छोटी और इतनी कठोर।

कमला। नहीं प्रभो इस प्रकार कहिये कि इतनी छोटी और इतनी सच्ची॥

सुरेन्द्रसिंह। तो क्या सच्चा प्रेम इसी ढिठाई का नाम है?

कमला। नहीं तो क्या सच्ची बात कहना चाटुकारी का काम है?

सुरेन्द्रसिंह। स्वामिभक्ति प्रेम को चाटुकारी कहना बड़ी भारी मूर्खता है॥

कमला । और चाटुकारी को प्रेम समझना भीभूलहै ।

सुरेन्द्रसिंह । सच्चे प्रेम को चाटुकारी कहना तुझे उचित नहीं ॥

कमला । यह तो संसार ही जानता है कि जो गरजता है सो बरसता नहीं ॥

सुरेन्द्र० । हृदय का हाल मनुष्यों के बातों से मालूम होता है ॥

कमला । सुगंध अरगजा गंधी के कहने से नही परन्तु अपनी सुगंध से पहचाना जाता है ॥

सुरेन्द्र० । छोड़ दे यह हठ ॥

कमला । कभी झूठ नहीं बोलूंगी ॥

सुरेन्द्र० । मुझे यह बातें नहीं अच्छी लगतीं ॥

कमला । संसार को तो अच्छी लगती हैं ॥

सुरेन्द्र० । परन्तु मुझे नहीं अच्छी लगतीं ॥

कमला । ईश्वर को अच्छी लगती हैं ॥

सुरेन्द्र० । देख ! पीछे पछतायेगी ॥

कमला । जो कहा सच्च है ॥

सुरेन्द्र० । मैं तुझे कुछ न दूंगा ॥

कमला । ईश्वर देनेवाला है ॥

(सुरेन्द्र का क्रोधित हो सिंहासन से उतरना और सब का खड़ा हो जाना) सुरेन्द्र० भला, तो तेरी सच्चाई तेरा कौतुक बनेगी ॥ श्री भगवान की शपथ लेकर मैं यहीं से कुल पैतृक प्रेम और रुधिर सम्बन्ध को तुझ से पृथक करता हूं और तू आज से सदा के लिये मुझसे और मेरे हृदय से वंचित रह । उन जंगली राक्षसों की

भांति जो अपने बच्चों को आपही मारकर भक्षण कर जाते हैं पर मैं तो तेरे साथ इतनी निठुरता न करके तुझसे केवल प्रेम और नाता तोड़ता हूं। जा जहां तेरा जी चाहे जा॥

जीतसिंह। (आगे बढ़कर) बस प्रभो बस, ऐसे कठोर वाक्य और ऐसे हृदय बेधी श्राप इन कानों से नहीं सुने जाते एक २ रोम से त्राहि २ का शब्द कर्ण गोचर होता है॥

सुरेन्द्र०। तो क्या ऐसी दुष्ट सन्तान को माता पिता आशीस् देते हैं?

जीत०। धर्मराज अच्छा यदि कोई भारी अपराध करे तो क्या माता पिता उसे काट कर फेंक देते हैं? कदापि नहीं वर उसपर भी क्षमा करही देते हैं॥

सुरेन्द्र०। नहीं, कदापि नहीं, ऐसी दुष्ट संतान को क्षमा की कोई आवश्यकता नहीं है॥

गोपाल। (कमला का भावी पति) महाराजा प्रथम तो जिसे आप बड़ा भारी अपराध कहते हैं वह कोई अपराध नहीं है। दूसरे यदि सन्तान कैसाही अपराध करे पर माता पिता ऐसा हृदयविदारक श्राप नहीं देते। साधु लोग अपने को बुरा कहने वालों को भी क्षमा कर देते हैं। हरा भरा वृक्ष जो उसकी जड़ काटता है उस पर भी छाया डालता है॥ (सुरेन्द्र कमला को गोपालसिंह की तरफ़ ढकेल देता है)॥

सुरेन्द्र०। बहुत अच्छा। यदि आप को यह खोटी मुहर पसन्द है तो ले जाइये। इसको अपने साथ ही

ले जाइये। सौगंध है उस शक्तिमान् परमेश्वर की जिस के राज्य में कुल संसार बसता है। सौगंध है उस जग-दीश की जो प्रतिदिन करोड़ों मनुष्यों को राजा और करोड़ों को रंक बनाता है। ओ घमंडी लड़की आज से मैं तुझे मरी हुई जानूंगा। जा दूर हो न आज से तू मुझे अपना बाप समझना और न मैं तुझे अपनी बेटी जानूंगा॥ [राजा का आसन पर बैठना]

आनन्द। महाराज! महाराज!

सुरेन्द्र०। चपरहो आनन्द।

आनन्द। दीनानाथ!

सुरेन्द्र०। इधर आवो। माधवी और तारा सुनो, आज इसी समय से कुल राज्य मही से सोने तक तुम्हारा है और अब मुझको न धन की इच्छा है और न सन्मान की; केवल थोड़े दिन और समय बिताना है। इस हेतु ऐसा प्रबन्ध रक्खूंगा कि सौ सहचरों के साथ एक मास (माधवी) तेरे यहां और एक मास (तारा) तेरे यहां। और फिर;

आनन्द। प्रभो तनिक सोचिये॥

सुरेन्द्र। बस जिह्वा को थाम लो।

आनन्द। मनुष्य को चाहिये कि केवल क्रोधही से नहीं परन्तु कुछ बुद्धि से भी काम ले॥

सुरेन्द्र०। देखो शरीर राज्यकीय सम्बन्धों में बोलना अच्छा नहीं। यह बुड्ढा कोई दूध पीता बच्चा नहीं जो तुम्हारी चटपटी बातों से फिसल जायगा अथवा इस घमंडी की पुतली की ओर देखने से अपने

तिज्ञा से बदल जायगा ॥

" चन्द्र टरै सूरज टरै; टरै पृथ्वी आकाश ।

पे मेरो यह दृढ़ बचन, कबहु न होत निराश ॥"

आनन्द । प्रभो मैं प्रतिज्ञा तोड़ने को कदापि नहीं कहता केवल यही बिनती है कि यह सब करने के प्रथम तनिक सोच लीजिये ॥

सुरेन्द्र० । देखो धनुष की प्रत्यंचा चढ़ी है ; तीर के मार्ग में मत आवो । यदि सदा के हेतु चुप न होना हो तो थोड़ी देर के हेतु चुप हो जावो ॥

आनन्द। चुप ! क्या चुप ? प्रभो चाटुकारी का भूत आप को नरक की गुफा में ढकेले और दुष्ट लोग आप की आंखों में चाटुकारी की पट्टी बांध कर कष्ट की गुफा में ढकेलें और यह दास जिह्वा से कुछ भी न बोले धिक्कार है ऐसे दास पर जो इस प्रकार धर्म्म विमुख हो ।

" न चुप है न यह अंत तक चुप रहेगा ।

यही कह रहा हैं यही फिर कहेगा ॥

सुरेन्द्र । क्या !

आनन्द । कि आप अपने ऊपर बुरा कर रहे हैं बुरा कर रहे हैं !! बुरा कर रहे हैं !!!

सुरेन्द्र । सौगंध है उस सर्व शक्तिमान् की कि हम न्यायातिरिक्त नहीं पैर उठाते हैं ।

आनन्द । हे नरेश ! क्षमा कीजिये आप वृथा झूटी सौगंध खाते हैं । (राजा का कटार आनन्द पर तानना सब का खड़ा होजाना) ।

सुरेन्द्र । क्यों रे क्षुद्र अब तू यहां तक उद्दण्डता पर

उद्यत हुआ जाता है ?

आनन्द । प्रभो ! ठहरिये अपने वैद्य का बध करने से अपनाही रोग बढ़ जाता है ।

सुरेन्द्र । तू निरा जंगली है ।

आनन्द । परन्तु चाटुकार नहीं ।

सुरेन्द्र । मूर्ख है ।

आनन्द । परन्तु आप से अधिक बुद्धिमान ।

सुरेन्द्र । ठहर नीच । (महाराज का आनन्द को मारने के लिये कटार उठाना और का रोकना) ।

(मन्द गति से परदे का गिरना) ॥

॥ दृश्य दूसरा ॥

नरसिंह । ओ धोखा ! चंचलता ! धूर्तता ! इन्हीं वस्तुओं का नाम है सांसारिक बुद्धिमता है प्रकृति तू मेरी विधाता है मैं तेरे नियमों का प्रतिपालक हूं । आज कल तो सन्मुख प्यार पीछे कटारवाली कहावत सत्य है । जो इस से डरते हैं वे मूर्ख हैं और जो इस को करते हैं वे बुद्धिमान हैं । ओ वीरेन्द्र भाई तू पिता की सम्पत्ति से तीन भाग पाये और नरसिंह चौथाई क्यों किस हेतु ! तू सज्जन है और मै दुष्ट; तो क्या मैं ऐसी मूर्खता भरी बातों से अपनी आशा की लता को तोड़ दूंगा ? क्या मैं अपनी बांधी हुई चालों को अंत के हेतु तोड़ दूंगा ? नहीं कदापि नहीं वरन अपने रचे हुये इन मनहले जादू

से तेरी फुल भाग्यमानी आशाओं के घर को एक साथ फोड़ दूंगा (जीत का आना) ओ मूर्ख बुड्ढे।

जीत। शोक! दुःख! इतना बड़ा राजा और उस से ऐसा लड़कपन कमला ऐसी सच्ची पुत्री और उस से यह बुराई आनन्द ऐसे स्वामि भक्त सेवक और उस से ऐसी निठुरता केवल इतने अपराध पर कि एक ने चाटुकारी क्यों की और दूसरे की जिह्वा पर सच बात क्यों आई।

नरसिंह। (आप ही आप दिखलाने को) नहीं हो सकता कदापि नहीं हो सकता। ऐ लालची हृदय ऐसा कदापि नहीं हो सकता शोक! जिस ताल के जल से अपनी प्यास बुझाना उसी में विष मिलाना जिस वृक्ष की छाया में सोना उसी को मूल से नाश करना। हा! बीरेन्द्र ऐसा देवता और ऐसा नीच विचार पुत्र और पिता के प्राणों का ग्राहक! ओह! मेरी आंखों के आगे अंधेरा आता है माथ चकराता है— चकराता है।

जीत। कौन नरसिंह! यह क्या बक रहा है! यह मैंने क्या सुना क्या बीरेन्द्र मेरा पुत्र?

नरसिंह। ऐ देखनेवाले अकाश ऐ सुनने वाली पृथ्वी ऐ बगल से होकर जानेवाली हवा क्या तुम में से कोई ऐसा है जो मेरे पिता को एक शब्द "सावधान" कह सकता है (जीत नरसिंह का हाथ पकड़ता है)!

जीत। यह तुम कर सकते हो; नरसिंह यह तुम्हें करना होगा।

नरसिंह । पि, पि, पि, पिता मैं क्या सकता हूं !

जीत । यही तो तुम्हारा धर्म है ।

नरसिंह । या परमेश्वर तू हीं जानता है ।

जीत । और तुम भी जानते हो ।

नरसिंह । पिता मैं क्या जानता हूं !

जीत । नरसिंह ! क्या तू मेरा पुत्र नहीं है ? क्या मैं तेरा पिता नहीं हूं ? तू जो अभी बक रहा था और मैंने अचानक सुन लिया उस से मुंह मोड़ा चाहता है क्या बीरेन्द्र के साथ मिल कर तू भी मुझे मारना चाहता है (नरसिंह का हाथ मुंह बैठना जीतका उठाना)!

नरसिंह । आहि ! पिता क्षमा ।

जीतसिंह । केवल तुझ पर ।

नरसिंह । नहीं दोनों पर ।

जीतसिंह । वह दुष्ट है इस हेतु उसपर वज्र गिरना चाहिये ।

नरसिंह । और आप देवता हैं इस हेतु क्षमा करना चाहिये । (छाती से पत्र निकाल कर फेंकता है) ।

जीत । हे ! यह पत्र कैसा ?

नरसिंह । बी, बी, बी, बीरेन्द्र का नहीं मेरा है ।

जीत । मूर्ख अपराध का छिपाना भी अपराध है ।

नरसिंह । ऐ लालची चाह तेरे हेतु मेराभाई मारा जाता है ।

जीतसिंह । (पत्र पढ़ता है)

"वृद्ध पुरुषों को शिरोधार्य्य रखनेकी प्रणाली हमारे आयु के सर्वोत्तम विभाग को निरस बना देती है। जो हमारे धन को हम से उस समय तक सुरक्षित रखते हैं जब वृद्ध होकर हम उस का स्वाद चखने में अशक्त हो जाते हैं। इस हेतु मेरी यह अभिलाषा है कि रात्रिमें ठीक बारह बजे जिस समय कुलसंसार अचेत पड़ा रहता है यदि तुम्हारी छूरी ने।

नरसिंह। छूरी! छूरी! पिता छूरी।

जीत। मेरे पिता को सदा के हेतु सुलादिया।

नरसिंह। सदा के हेतु! पिता! सदा के हेतु।

जीतसिंह। तो मैं तुम्हें जितना द्रव्य देने से चूकता हूं उतनाही तुम से प्रेम रक्खूंगा। (अचंभित होकर) कौन लिखता है मेरा पुत्र!

नरसिंह। ओ चाल; धूर्तता; तनिक और बढ़ा।

जीतसिंह। शोक ऐसा विचार!

नरसिंह। ओ दुष्ट भाई तुझ पर ईश्वर की मार।

जीतसिंह। अपने पिता का नाशक हारे संसार।

नरसिंह। या प्रभो! मेरे वृद्ध पिता व मूर्ख भाई को इस कष्ट से बचाना २। पिता यद्यपि यह पत्र मैंने अपने भाई के चौकी पर से पाई है तथापि मुझे शंका है कि यह किसी शत्रु की ढिठाई है।

जीतसिंह। तो क्या मैं उस का पत्र नहीं पहचान सकता! क्या मेरी आंखें फूटी हैं!

नरसिंह। (स्वगत) आंखें तो नहीं पर बुद्धि अवश्य फूटी है (प्रकाश) पिता आज रात में देखना चाहिये।

यदि यह सब जाल रचा होगा तो अवश्य कुछ गड़बड़ होगा नहीं तो समझ लेना चाहिये कि किसी शत्रु ने यह काम किया है।

जीतसिंह। नरसिंह; शोक!

नरसिंह। पिता, महा शोक! (जीतसिंह का जाना) वाहरे नरसिंह अच्छा पिता को मूर्ख बनाया पर यह तो उल्लू गया उल्लू का बच्चा आया।

बीरेन्द्र। प्रणाम भाई जय शक्ति की।

नरसिंह। आहा कौन बीरेन्द्र कहो प्राणतुल्य प्रिय भाई क्या हाल है।

बीरेन्द्र। गाना।

चतुरगुनी. हारें गए हार, जग की न पाई सार
लाख कियो विचार।
जिनकी जगत बीच लाखन को है आस।
उनही को चित नित निसदिन है निरास।
देख ये संसार। चतुरगुनी।

क्यों भाई क्या तुम पिता के क्रुद्ध होने का कारण बता सकते हो?

नरसिंह। क्यों भाई तुमसे क्रोधित हैं तुम तो उन्हें प्राण से भी अधिक प्यारे हो।

बीरेन्द्र। हां भाई मुझ से।

नरसिंह। पिता के क्रोध को तुमने कैसे जाना?

बीरेन्द्र। अभी २ मार्ग में मिले मैंने प्रणाम किया तो वह मुंह फेर कर दूसरे मनुष्य से बात चीत करने लगे और कहने लगे कि संसार का संसार नीच है।

नरसिंह। वास्तव में यह तो क्रोध का लक्षण ह परन्तु कदाचित किसी शत्रु ने यह सब घात किया हो।

बीरेन्द्र। भाई शत्रु की घात तो मैं तब जानू जब मैंने किसी को सताया हो।

नरसिंह। भाई तुम भी कैसे अज्ञान हो आजकल बिना कारण लोगों के हुए मनुष्य शत्रु हो जाते हैं भला बताओ तो सही बिच्छू को क्या किसी से बैर है जो डंक मारते हैं।

बीरेन्द्र। भाई मैं तुम्हारे समीप इसी कारण आया हूं कि पिता के क्रोध की शान्ति का उपाय बताओ।

नरसिंह। चिन्ता न करो तुम्हारे प्रसन्नता के दिन अब बहुत शीघ्र लौट आवेंगे। दो तीन शब्द ही में पिता को प्रसन्न कर दूंगा। तुम अब पधारो (बीरेन्द्र का जाना) ईश्वर तेरा नाश करे। (नरसिंह का हंसना) वाह रे नरसिंह कैसा उल्लू पिता और उल्लू का पट्ठा भाई पाया है आज तक तो जितने पासे फेंके सब में पौबारह आया है अब केवल एक रात्रि का और काम है जो यदि राजा नल की आत्मा ने सहायता पहुंचाया तो समझो वह भी दांव हाथ आया। गाना—

ओ बीरेन्द्र २ वो दुष्ट भ्रात करूंगा मैं तेरा नाश
करूंगा मैं तेरा नाश और रहे सदा तू उदास॥
इस चाल से तुझे गिराऊं, कुल सम्पति बसमें लाऊं
और मूर्ख पिता को रुलाऊं, तब आनन्द २ गाऊं।

॥ तीसरा दृश्य ॥

सुरेन्द्र । वह नही आती; किस कारण नहीं आती ॥

आनन्द । उसकी इच्छा ॥

सुरेन्द्र । कारण ?

आनन्द । नीचता-कृतघ्नता ॥

सुरेन्द्र । हाय राज्य से छूटतेही यह फल मिला ॥

आनन्द । तो महाराज ने प्रथम ही क्यों न बिचारा॥

सुरेन्द्र । शोक नीच २ सहचर भी मेरे सर्दारों से लड़ाई करें; तुझसा मनुष्य एक नीच को बुलाये। नहीं २ एक महाराज अपने सेवक को बुलाये और वह न आये। मेरी बातों का इस प्रकार रूखा उत्तर ॥

आनन्द । तो कदाचित महाराज को यह ज्ञात नहीं कि नीच का नाम ऊँच रख लेने से ऊँच होता नहीं ॥

सुरेन्द्र । बस कर आनन्द ! बस कर मैं दुःख और क्रोध से पागल हो जाऊँगा । यदि माधवी उतावली होकर राक्षसी बन गई है तो मैं आजही उसके चेहरे पर ठोकर मार अपनी दूसरी पुत्री तारा के पास चला जाऊँगा ॥

आनन्द । हो सकता है ॥

सुरेन्द्र । तू मेरा मुंह क्या देखता है ? क्या तू यह समझता है कि माधवी की भांति तारा भी मुझे कष्ट पहुंचायेगी ॥

आनन्द । क्षमा कीजिये जब बड़ी पुत्री से आशा न

भर पाई तो छोटी से क्या आशा की जायगी । प्रभो तल-
वार और छूरी को देखने में अंतर जान पड़ता है परन्
गला काटने में दोनों समान हैं (माधवी का आना) ।

माधवी । प्रणाम पिता जी ॥

सुरेन्द्र । कौन माधवी !

माधवी । हां महाराज ॥

सुरेन्द्र । आज क्या बिचारा जो इस बुड्ढे मूर्ख को
देखने आई ॥

माधवी । इन कटु बचनों के सुनने और उत्तर देने
को न तो मेरे पास समय है और न शक्ति है । यथार्थ
यह है कि मुझे कई कारण बश इस घर की अति आ-
वश्यकता है । यदि आप इन राज घरों में से किसी
और घरों में चले जाते तो बड़ी कृपा होती ॥

सुरेन्द्र । तो क्या मैं यह घर छोड़ दूं ?

माधवी । बस और मैं अधिक क्या कहूं ॥

सुरेन्द्र । तो स्पष्ट क्यों नहीं कहती कि मैं श्मशान
पर चला जाऊँ ॥

माधवी । मेरी मंशा कदापि नहीं है । यथार्थ तो
यह है कि आपके नीच सेवकों ने सहने से अधिक सिर
उठा रखा है । कहीं मार; कहीं पीट, कहीं हल्ला, कहीं
पुकार , यह घर है अथवा हाट ! ॥

सुरेन्द्र । आश्चर्य !

माधवी । एक से एक अधिक नीच हैं । बस प्रभो
इस मनुष्य को इतना हंसाये कि वह रो न दे ॥

सुरेन्द्र । झूठ । असत्य । यह सब बातें असत्यत

भरी हैं। मेरे कुल सेवक सच्चे, स्वामिभक्त और अच्छे हैं।

माधवी। बस। बस। तो ज्ञात हुवा कि आप स्वयं ही इनके नीचता पर तेल डालकर भड़काते हैं आश्चर्य है कि आप मुझे झूठी और दरिद्र नौकरों को सच्चे और अच्छे बनाते हैं॥

सुरेन्द्र। दरिद्र। क्या कहा दरिद्र! क्या किसी दरिद्र को बिना अपराध मारडालूं; पीसडालूं, हृदय चीर डालूं। क्यों किस कारण? क्या इस कारण कि उन्होंने पहनने के हेतु यह सुनहला चिथड़ा नहीं पाया है। क्या दरिद्रों के पास आंख, कान, हाथ, पांव, शक्ति और बीरता नहीं है जो धनवान रखते हैं। क्या सूर्य्य भगवान धनवान की गृह की भांति दरिद्रों के झोपड़ियों पर अपना प्रकाश नहीं डालते। क्या इस पृथ्वी पर चलने को ईश्वर ने उनको आज्ञा नहीं दी जिसपर की धनवान चलते फिरते हैं। क्या यह आकाश धनवान को अपने छत तले बिठाता है और दरिद्रों को ठोकर मार कर निकाल देता है। अरे ओ दरिद्रों पर हंसने वाली घमंडी पुतली किस कारण थोड़े दिवसों के हेतु इतराती है। जा देख श्मशान पर की मृत्यु के पश्चात धनवान और धनहीन दोनों की क्या अवस्था होती है॥

माधवी। मुझे इससे कुछ काम नहीं कि धन हीनों को सुख देना चाहिये अथवा दुःख पर हां इतना तो अवश्य है कि यह नीच धनहीन पुरुष सिर चढ़ाने के हेतु नहीं बनाये गये हैं॥

सुरेन्द्र। फिर किस कारण बनाए गये हैं?

माधवी। इस हेतु बनाए गये हैं कि इनके माथे के घमंड से धनवानों की जूतियां बनाई जांय॥

सुरेन्द्र। क्या कोई कह सकता है कि यह मेरा रक्त है?॥

माधवी। बस! बस! इन बातों को जाने दीजिये मैं स्पष्ट कह देती हूं कि यदि कल तक यह कुल घर इन नीचों से न खाली किया जायगा तो विवश हो मुझे निठुरता और बल पूर्वक हस्तक्षेप करना पड़ेगा॥

सुरेन्द्र। निठुरता। अच्छा लाव मेरा घोड़ा लाव और मेरे सहचरों को भी बुलाव जाओ घमंडी देवी दूर हो। मैंने आज तो तुझसे कुल नाता तोड़ दिया। तू मेरा रक्त नहीं वरन् वह कुल्हाड़ा है जो लोहे के हाथ में बैठ कर उसको काटता है। तू भी [illegible] है जो सब से पहले अपने पालक को काटता है। स्वामिभक्तों को छिप दिखाऊं पनहीनों को ढूंढ दूं? क्यों किस हेतु क्या इन चमकते हुये रत्नों पर जो भूख के समय भी तेरा पेट नहीं भर सकते। क्या इन चमकते हुये ठिकड़ों पर जो मरने के पश्चात् तेरे कफन को भी काम नहीं आ सकते॥

आनन्द। महाराज!

सुरेन्द्र। हाय कमला, कमला, आनन्द! केवल इतनेही अपराध पर कि वह सच्च बात क्यों बोली मुझ दुष्ट ने उसका भाग छीन कर इस असत्यता की देवी पर अर्पण कर दिया। हे प्रभो दीनानाथ यदि आपकी यह इच्छा है कि यह दुष्ट फूले फले तो मुझ दुष्ट पर दया करके अपने प्रतिज्ञा से मुंह मोड़ लीजिये। इसके

बाल बच्चों को इसी ढिग गिरादे । इसके वीर्य को नाश कर इसके प्रेम को उजाड़ दे । और यदि संतान हो तो उन पक्षियों की भांति जो जो अपने बाल बच्चों को अपने पंजे से भक्षण कर डालते हैं इस को सताये इसको जलाये और यह भी अपनी दुष्ट आंखों से रक्त की नदी बहाये । जिससे इसे भी ज्ञात हो कि दुष्ट संतान सर्प से भी अधिक नीच होती है ॥

माधवी । हँ । हँ । हँ । हँ । यदि मैं इन शापों पर ध्यान देती तो आज दिन धनहीनों के पांव छूती और सदा उनकी विनती किया करती ॥

सुरेन्द्र । ओ घमंडी युवती ! इस भय में रहती है और इतना इतराती है । अरे हर ! हर ! उस हाथ से जिसने भीम और द्रोण की खोपड़ी क्षणिक में मसल डाला। अरे भाग र उस [illegible] लाठी से जिसने रावण ऐसे घमंडी की खोपड़ी एकही चोट में चूर कर डाली । थू है तेरे इस रूप और तुझ पर मैं सिंहों के आगे गिड़-गिड़ाऊँगा । मैं चीतों से विनती करूँगा मैं मांसहारी जीवों के सन्मुख भूमि मांगने जाऊँगा पर ओ चीतों से भी कठोर हृदय रखनेवाली, सुन्दर सापिन तेरे इस नीच भवन में कदापि न आऊँगा ॥

(सुरेन्द्र का क्रोध में चला जाना,)

दृश्य ४ (कौमिक सीन)

(घसीटा सिंह का हाथ में अंग्रेज़ी पुस्तक लिये आना)

घसीटा । सी-ऐ-टी-कैट, आर-ए-टी-रेट, एम-ए-

टी-सैट ओहो। समय हो गया और अभी तो मैंने जेन्टलमैनी सूट नहीं डाटा-अरे कोई है। बोय २।

नौकर। हुकुम अन्नदाता।

घसीटा। ओ यू गद्धा अन्नदाता मत बोलो, राय बहादुर बोलो!

नौकर। अच्छा रायबहादुर महाशय आज्ञा।

घसीटा। अच्छा बहरा वह मारकोट से रुमाल पर लगाने का वास्ते ले आया या नहीं?

नौकर। रायबहादुर जी बहिरा तो नहीं आया।

घसीटा। बहिरा से क्या काम, यू फूल; बहरा २ नहीं आया?

नौकर। रायबहादुरजी बहिरा तो मैं ही हूं।

घसीटा। तो जाव मारकोट से रुमाल पर लगाने का लेआव जाव।

नौकर। लगाने वाला का रायबहादुर जी!

घसीटा। जा यू फूल रास्कल (नौकर का जाना) ओहो अब मैं जेन्टलमैन फैसनेबल ड्रेस में कैसा सुन्दर लगता हूं। बस अब मैं पूरा जिन्जरमैन अरे नहीं २ जिन्टलमैन बन गया। नहीं; परन्तु इससे भी उत्तम पदवी पाई है आज ५ दिवस हुये कि मुझे गवरन्मेण्ट ने बुलाकर घसीटवा से घसीटा सिंह रायबहादुर बना दिया और ऊपर से यह पदक और चोंगा जो मेरे हेतु लंडन से आया था दिया है। इस हेतु अब मैं पूरा युरोपियन ड्रेस पहिनना सीखता हूं। सीखना कैसा! मैं तो सीख चुका जैसे कोट, कमीज,

स्टाकिंग, बूट, नकटाई, कालर, पतलून और हैट इत्या-
दि २ और उन सबके ऊपर यह रायबहादुरी का चोंगा
जिस समय इस फुल ड्रेस में बाहर निकलूंगा तो दूसरे
देखकर समझेंगे कि कोई बड़ा अफसर आता है।

(नौकर का आना)

नौकर। रायबहादुर जी बोलावा।

घसीटा। क्या लाया ?

नौकर। अस्तरी लावा

घसीटा। ओ यू अस्तरी का बच्चा यह किसने
मांगा था ?

नौकर। अरे साहीब तुमही तो कह्यो रह्यो की
कपड़े पर लगाने का अस्तरी लाव।

घसीटा। ओ यू फूल गधा तुम बड़े आदमी के
पास सेवकाई करने योग्य नहीं हो। यह धोबी का
अस्तरी लेकर हम क्या करेंगे ? तुम नहीं जानता कि
हम रायबहादुर हैं कुछ धोबी तो हैं नहीं॥

नौकर। फिर याका हम का करें रायबहादुर जी
जो तुम मगावा सो हम ले आवा

घसीटा। तुम बड़ा गधा है हम वो मगाया था।
रूमाल पर छिड़कने का समझा।

नौकर। हां, समझा, गुलाब ?

घसीटा। गुलाब जुलाब नहीं। ओ यू काला
कसाई वाला, गुलाब गँवार लोग लगाते हैं। वो अरे
तुम उसका इंगलिश नाम बोलो॥

नौकर। तो अभी हम तो वाका नाहीं जानत

घसीटा। फिर तुम अच्छा मनुष्य नहीं है

नौकर। रायबहादुर जी इंगलिश तो हम नहीं पढ़े हैं आप बताव तो हम जाने।

घसीटा। चुप रहो गधा। हम नाम भूल गया कुछ उस्तरह बस्तरह।

नौकर। काहू कहिया उस्तरा।

घसीटा। नहीं उस्तरा नहीं ऐ यो जंगली हजाम तुम इतना बड़ा हुआ और इंगलिश नाम नहीं जानता।

नौकर। अरे तू हम का काहे घुड़कत है अरे जब इतना बड़ा रायबहादुर है के अंग्रेजी नाम धाम नहीं जानता तो हम का जानी।

घसीटा। ऐ यू गधा जाव तुम किसी काम का आदमी नहीं। ओहो २ यह क्या हुआ। हां वह तो मैं लगाना भूल गया।

नौकर। कौन बस्तु लाऊँ

घसीटा। दौड़ो शीघ्र दौड़ो हमारा वह लाव

नौकर। वह क्या हम तो नहीं समझा।

घसीटा। अरे वही जो कल मारकीट से जकड़बन्द करने को लाया था।

नौकर। समझा २ अभी लायत हूं।

घसीटा। ओहो। बड़ा आदमी बनना भी बड़ा कठिन काम है और यह कुल फैशन की वस्तुओं का इंगलिश नाम स्मरण रखना तो उससे भी अधिक कठिन है।

नौकर। लोहो साहिब

घसीटा। अररर। घोड़े का सामान क्यूं लाया।

नौकर। तो रायबहादुर जी और क्या लाऊं तुमही तो कह्यो रह्यो कि वह चमड़े का अकड़बंद करने को लेआवो।

घसीटा। ओ यू रास्कल, फूल; हट जाव।

(अंग्रेज़ी बहरा का आना)

अं० बहेरा। हां २ माइ डियर फ्रैन्ड यह क्या हुवा।

घसीटा। देखिये इस मूर्ख से मैंने पतलून का वह मंगाया तो वह यह लाया॥

अं० बहेरा। तो कदाचित आपने ब्रेसिस मंगवाया होगा।

घसीटा। हां २ वही ब्रेसिस जाव लाव। ओहो अब मैं कैसा सुन्दर लगता हूं। अब तो मैं इगलिश बोलना सीखूंगा और फिर विलायत जाऊँगा और वहां से एक मेंडम व्याह लाउंगा और फिर उसके साथ।

गाना

न्यारी अकड़ फवन से मैं चलूं। सारे गांव का राय बहादुर बनू॥ आगे पीछे सिपाही दो चार रखूं। तनिक छाती को खूब निकाल चलूं॥ देखो मेरा सन्मान और प्रतिष्ठा।

दृश्य ५ (राजभवन तारा)

गाना—

धन २ सुघड़नार को॥ देखी न सुनी ऐसी दुखीआ

को प्रतिव्रता नार को। राज दुलारी, प्राण पियारी पै हृदय प्रसन्न लखात। करूँ सेवकाई प्राणजात। अरणू प्यार को॥ धन.....................

आनन्द। हमको और हमारी जो जीवन देखने में बड़ी भारी वस्तु दृष्टि गोचर होती है पर यदि ध्यान देकर देखोगे तो चिल्ला उठोगे कि यह शरीर हड्डियों का बना हुवा एक पिंजरा है जिसमें स्वांस रूपी पक्षी बंदी है और जो बैठी हुई यह उपदेश देरही है कि ऐ! संसार में बसनेवाले घमंडी पुरुषो, किस कारण थोड़े दिवसों के हेतु यों मचल रहे हो सदा चढ़ने के पश्चात गिरना उदय के पश्चात अस्त है। मृत्यु आवेगी, नर्क के गढ़े में उतारेगी। मृत्यु श्मशान पर खड़ी होकर पुकारेगी॥

सुरेन्द्र। हमारे आनेकी सूचना पाई और न तो किसी को भेजा और न स्वयं अगवानी के हेतु आई॥

जीतसिंह। यथार्थ में ऐसा व्योहार तो धर्म के विरुद्ध है॥

सुरेन्द्र। अच्छा तुम स्वयं जाओ और मेरी पुत्री को बुला लाओ॥

आनन्द। प्रभो!

सुरेन्द्र। क्या वह नहीं आती है, निठुरता दिखाती है अरे जाव, जाव; उससे जाकर कहो कि वृद्ध पिता अपनी पुत्री से मिलना चाहता है। एक महाराज अपनी प्रिय राजकुमारी को बुलाता है॥ (आना)

तारा। मैं बड़ी प्रसन्न हुई कि प्रभो ने अपने चरण कमलों से इस तुच्छ झोपड़ी को पवित्र किया॥

सुरेन्द्र। प्रसन्न अवश्य होगी। यदि मेरे आने से तुझे शोक होता तो मैं यही समझता कि तेरी मा मेरी स्त्री नही वरन वह वेश्या थी , जिसने सांपके बच्चे को अपनी संतान कह पाला।

तारा। महाराज! श्री माताजी के विरुद्ध ऐसे कटु वचन न निकालिये। आप बहन के पास से किस कारण चले आये?

सुरेन्द्रसिंह। क्यों आया हूं। भाग्य का सताया हूं कभी लोग मेरे पास न्याय के हेतु आते थे आज मैं तेरे पास न्याय के हेतु आया हूं वह फुलवाड़ी जिसके पेड़ की तू फल है। वह डाल जिसने गोदियों में तुझे पाला। इसी को फूंक के दुष्टों ने राख कर डाला और वह उड़ कर तेरे पास न्याय के हेतु आई है!

तारा। यह बातें मेरी बहिन से संबन्ध रखती हैं क्या?

सुरेन्द्र। हां। उसी दुष्टपुत्री से संबन्ध रखतीहैं।

तारा। प्रभो। जैसा आप कहते हैं वैसी तो मेरी बहन कदापि नहीं है। आप बुद्धि को उपयोग में लाइये। और प्यारी बहन के पास लौट जाइये।

सुरेन्द्र। कदापि नहीं। वह महादुष्टा और नीच है और तू उसके निकट पुनः जाने को कहती है। वह विषैली नागिन है और उसने मेरे हृदय को डस लिया है और सिंहों की भांति नोच २ कर खा लिया है।

तारा। आहि २ मैं देखती हूं कि यदि आप मुझ से भी कभी क्रुद्ध हो जायेंगे तो मुझको भी इसी प्रकार

श्राप देने लग जायगे।

सुरेन्द्र। नहीं। तारा नहीं। मैं अपना ओठ र
लूंगा। मैं अपनी जिह्वा काट डालूंगा पर तेरे ऐसे
सज्जन पुत्री को कदापि श्राप न दूंगा। तू देवता है
वह राक्षसी है। तू वह छुरी है जिससे वैद्य सड़े हुए
मांस काट रोग अच्छा करता है और वह वह छुरी
है जो धनहीनों के गले पर बिना कारण फिरती है
और उन्हें नाश करती है वह केवल सुखी का आदर
करती है और तू दुखियों की सहायता करती है
वह मेरे शरीर में घाव करती है और तू मलहम लगाती
है। वह मेरे नेत्रों को फोड़ती है और तू पुनः नेत्र
वाला बनाती है।

तारा। बस कीजिये, पिता जी बस कीजिये
आपकी बातें कुछ ध्यान में नहीं आतीं [माधवी को
आती देखकर] ओ देखिये बहिन स्वयं आती हैं॥

सुरेन्द्रसिंह। हे परमेश्वर यह मैं क्या देखता हूँ
तारा! क्या तुझे मेरे इन आंसुओं पर भी दया
नहीं जो तू मेरे सन्मुख इस दुष्ट से हाथ मिलाती है?

माधवी। (हंसकर) लो वृद्धावस्था में नेत्रों
भी दोष हो गये। क्या हाथ मिलाना कोई बुरी
बात है?

तारा। कहती तो सत्य हो। क्यों पिता गले
मिलना भी कुछ अपराध है?

सुरेन्द्र सिंह। है और अवश्य है इससे हट यह
स्त्री नहीं वरन वह काली नागिन है जो धीरे

दय पर चोट करती है इसका हृदय ऐसा कठोर है कि जो इस पर गिरता है यह उसे तोड़ डालता है। और जिसपर यह स्वयं गिरता है उसे पीस डालता है।

तारा। तो आपकी यह आज्ञा है कि बहन को बहन से प्रेम न करना चाहिये।

सुरेन्द्रसिंह। वह दांत जो मुंह में रहकर जिह्वा को काटे उसको प्रथमही तोड़ देना चाहिये।

तारा। तो पिता मैं ऐसी बातें कदापि नहीं मान सकती।

सुरेन्द्र। अरी! अभी तू बालक है। कैसी बहन और कैसे भाई? संसारी मनुष्य नेत्र और बरौनी के भांति हैं जो एक साथ रहकर भी एक दूसरे को देख नहीं सकते।

तारा। यथार्थ में यही है प्रभो।

सुरेन्द्र। इसको देखो जिसको मैंने अपनी गोद मे पाला। रात्रि को दिवस और दिवस को रात्रि कर डाला। आज यह ईश्वर को भूल गई है। यह भी नहीं जानती कि (सुरेन्द्र) कौन कुत्ता है या किस खेत की मूली है।

माधवी। इसमें मेरा कुछ दोष नहीं है केवल आपका क्रोध है।

सुरेन्द्र। पुत्री अब ईश्वर के हेतु मुझे पागल मत बना। बस जी और जीने दे। अब मेरी आयु इसी स्थान पर बीतेगी। प्यारी पुत्री तू अपने इस बूढ़े पिता और उसके १०० सहचरों को अपने राज

भवन में स्थान न देगी ! (तारा का माधवी की ओर देखना उसका मान करना)

तारा। पिता प्रथम तो आप को बहिन के यहां रहने में चिढ़ है और अब मेरे सहस्त्रों सहचर उपस्थित हैं तो आपको १०० रखने की क्या आवश्यकता है।

सुरेन्द्र। अच्छा तो ५० ही सही।

तारा। यह भी अधिक है।

सुरेन्द्र। अच्छा ४०, ३०, २०, १०

माधवी। अजी केवल एक मनुष्य की आवश्यकता है।

तारा। बस।

माधवी। यदि सच पूछिये तो एक की भी क्या आवश्यकता है।

सुरेन्द्रसिंह। हे ईश्वर ! ईश्वर यदि आप की यही इच्छा है कि इनके हृदय को कठोर बनादे तो मुझको सहारा दीजिये। ओ ! तुम ; तुम , ओ दुष्ट पुत्रियो तो क्या तुम समझती हो कि मुझे सताकर सुख पावोगी नहीं। कदापि नहीं। धोखा मत खाव। ईश्वर खेलमें नहीं उड़ाया जा सकता। उसकी लाठी शब्द हीन है। उसकी चक्की चलने में धीमी पर पीसने में बड़ी चंचल है। मैं उसके निकट न्याय हेतु जाऊँगा वो बोलेंगे मैं बुलाऊँगा। मैं उन्हे अपना हृदय चीरकर दिखाऊंगा (सुरेन्द्र का क्रोध में आकर हृदय चीरना चाहना आनन्द का रोकना। राजा का बेसुध होना उसका धीरे २ ले जाना)

❋ दृश्य ६ ❋

जीतसिंह का मकान। रात्रि के बारह बजे का समय है सिपाही बाहर पहरा दे रहा हैं। नरसिंह का एक घातक को भीतर ले आना और स्वयं लुक जाना सिपाहियों का जागकर हल्ला मचाना। घातक का सिपाही को मारकर भाग जाना। सिपाही का चिल्लाना बीरेन्द्र का तलवार लिये बाहर चले आना नरसिंह जीत को उँगली से बीरेन्द्र के ऊपर दोष लगाना।

ड्राप।

॥ * दृश्य १ ला * ॥

बीरेन्द्रसिंह का सन्यासियों के भेष में दिखाई देना। बीरेन्द्र का गाना:—

काहे मन संकट से घबराया, बुधमानी, अभिमानी; राजा और रानी सभी ने दुख पाया॥ क्यों मूरख भूला यहां जो फूल यह फूला। कब न वह मुरझाया ॥ संकट से० ॥

कौन जानता है कि मैं कौन मनुष्य हूं। इस भिखारी के भेष में एक सर्दार का पुत्र हूं। कौन कह सकता है कि मैं इस फटे हुये वस्त्र पहिने, एक मंत्री का लाल हूं चल बीरेन्द्र चल और बिचारे सुरेन्द्र की

सहायता कर ; वह झूठा दोष जिसके भय से तू छिपा फिरता है बुद्धिमानी से पृथक करदे ।

वीरेन्द्र का गाना ।

संसार दुक्खों की एक खान है प्यारे , ना यहां मन ललचाना । सांझ समझ के आठहरे हैं, भोर को है जाना ॥ टेक ॥ चुन २ माटी महल बनाया मूरख कहे घर मेरा, ना घर मेरा ना घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा । मत ललचाना, चित न लगाना, हर का गुन गाना ॥

(वीरेन्द्र का जाना और शीतल नरसिंह का आना)

शीतल । क्यूं नरसिंह ।

नरसिंह । क्यों पिता जी आपने मुझे किसके निकट [illegible] था ?

शीतसिंह । माधवी, [illegible] के ।

नरसिंह । नहीं, पर [illegible]लिनों के ।

शीतसिंह । क्या तुम्हारा उपदेश अनुकूल न हुआ ?

नरसिंह । स्वामी ! यदि पाषाण होता तो भी जल होकर बह जाता, लोहा होता तो गल जाता; पर ईश्वर जानें इन दुष्टों का हृदय किस वस्तु का बना हुआ है कि तनिक भी न हिला ।

शीतसिंह । जाव, जाव; पुनः जाव, उन्हे लाकर उस बिचारे के दुक्खों को दिखावो, ईश्वर की सौगंध यदि उन्होंने सहायता न की तो वृद्ध महाराज शीत और आंधी से पागल हो जायेंगे । चलो २ जब वह नेत्रों से स्वयं देखेगी तो उनके हृदय में दया आवेगी ॥ (जाना)

सुरेन्द्रसिंह । छोड़दे २, तूभी मुझे छोड़दे; चलाजा ।

आनन्द । प्रभो !

सुरेन्द्र । (आकाश से) बरसो, अत्यन्त बरसो, अत्यन्त चमको; हा अग्नि; मट्टी, जल; इन सब को घूस दिया गया है; वह सब मेरी पुत्रियों से मिल गये हैं। जा २ तूभी मिल जा।

आनन्द । प्रभो ! पत्थर गिर रहा है।

सुरेन्द्र । गिरने दे २ चल ऐ पवन अत्यन्त वेग से चल, ऐ आकाशों इतनी व्यग्रता से बरसो की पर्वतों की चोटियां, महलों के छत डूब जांय।

वीरेन्द्र । हाय।

आनन्द । ऐसी सन्तान को धिक्कार है जिन के हृदय में ऐसे तुच्छ ध्यान उत्पन्न हो जाते हैं।

सुरेन्द्र । और उस पिता को भी धिक्कार है जो अपने वीर्य से ऐसी दुष्ट संतान उत्पन्न करता है उस माता को भी धिक्कार है जो अपने स्तनों का दूध पिला २ कर संसार के दुःख को बढ़ाती हैं और उस प्रेम को भी धिक्कार है जो ऐसे विषैले दन्तवाले स्वानों से भी प्रेम रखता है॥

वीरेन्द्र । हाय। कैसी भली सौन्दर्यता क्षण भर में नष्ट हो गई, यदि धन हीन मनुष्य जिनके पास एक चिथड़ा भी नहीं है इस प्रकार दुःख भोगे तो सम्भव है। परन्तु इतने बड़े महाराज से ऐसा दुःख कैसे सहन किया जायगा।

सुरेन्द्र । (स्वयं) ऐ राज्य गर्व तूं इन दुःखों को झेल जिसमें तुझे ज्ञात हो की ईश्वर की दरिद्र प्रजा

किस प्रकार अपना दुखी समय बिताते हैं ।

बीरेन्द्र । प्रभो ! किसी स्थान में वास कीजिये जहां किसी प्रकार का भय न हो ।

सुरेन्द्र । ऐसा स्थान तो केवल श्मशान के अतिरिक्त और कोई नहीं है । परन्तु वहां भी सुख नहीं, वहां भी इस तनपर सहस्त्रों लकड़ियां पड़ती हैं । अग्नि जलती है, घी ऊपर से उसको और भी दधकाती है । कष्ट दिखाती है, सताती है । इतने पर भी जो जलने के पश्चात् बचती है वह नदी में बहाई जाती है । जिस से जलजन्तु खाकर अपना पेट भरले हैं ।

आनन्द । बस कीजिये, हे प्रभो ! मेरे महाराज मेरे स्वामी , मेरे दीनानाथ ।

सुरेन्द्र । चुप, मिथ्यावादी चाटुकार, वह मनुष्य जो दरिद्रों की भांति भी अपना जीवन नहीं व्यतीत कर रहा है । उसको तू एक महाराज बताता है; हाय इन्हीं वाक्यों ने मुझे धोखा दिया । उन्हीं २ चाटुकारियों से मेरी पुत्रियों ने मुझे लूट लिया । तो क्या तूभी इसी प्रकार मुझे लूटना चाहता है । अब मेरे पास क्या है; हां है ।यह सड़ा हुवा चिथड़ा जिसे मैंने अपने कफन के हेतु रख छोड़ा है । ले यह भी न रक्खूंगा । नंगाही संसार में आया था और नंगाही रहूंगा. और नंगाही चला जाऊँ- गा । आले उतार, उतार; उतार । (सुरेन्द्र का अपना कुरता फाड़ना आनन्द का रोकना जीत व माधवी का आना)

जीतसिंह । हे दीनानाथ ! प्रभो सत्यनाराण ।

सुरेन्द्र। दुष्ट, चांडालिन, नीच, जा २ चली जा, अपने सुख के गृहों में जा सो, सुखों के राजभवन में सो। फूलों के पलँगों पर सो; और यहां तक सो कि अंत में जग उठे वो तेरे शरीर के एक २ भाग, अलग हो जायँ; कोई खा जायँ नाश हो जायँ॥ (जाना)

जीतसिंह। (माधवी से) देखिये २ क्या यह दशा किसी से देखी जा सकती है क्या किसी मनुष्य की ऐसी दशा आपने देखी है?

माधवी। हैं यह आंखें हैं तो इस मनुष्य को इससे भी अधिक बुरी अवस्था में देखूंगी और तुम भी देखोगे।

जीतसिंह। न कहिये, वो बातें जो दुःख और कृपा से दूसरे मनुष्य भी नहीं कह सकते आप सगी पुत्री हो इस प्रकार न कहिये। ईश्वर यदि चाहेंगे तो ऐसा कदापि न होगा और यदि होने वाला भी हो तो आप सगी पुत्री हैं आप का धर्म है कि स्वयं कृपा कीजिये और ईश्वर से भी अपने पिता के हेतु कृपा चाहिये।

माधवी। ऐसे हठी मनुष्य पर कृपा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

जीतसिंह। आवश्यकता नहीं है! यह कैसा लड़कपन क्यों महाभागे! जब कभी आप लड़कपन में खेलते २ गिर पड़ती थीं तो क्या महाराज यह कहते थे कि अभी आवश्यकता नहीं है न उठावो! क्यों, जिस समय बचपन में आप भूख से बिलख कर रोती थी तो क्या महाराज महारानी से यही कहते थे कि अभी आवश्यकता नहीं है दूध न पिलावो? नहीं २ कदापि नहीं

वरन जब कभी आप का स्वास्थ्य बिगड़ जाता तो यह ऐश्वर्य सुख जिसको आप चीलों और गिद्धों से नोचवाना चाहती हैं रोते २ सूख जाता।

माधवी। यह सब कहने का फल कुछ नहीं है॥

जीतसिंह। खेद है कि यह वृक्ष जिनमें न तो मनुष्यों की भांति बुद्धि है और न प्रेम है, परन्तु फिर भी वह माली के काम आता है। अपने पुष्पों से उसे सुगंधित कर देता है। और अपनी छाया में बैठाता है, परन्तु आप अपने पिता को जिसने आपको प्राण की भांति पाला है रात्रि को दिवस और दिवस को रात्रि कर डाला तनिक भी आज्ञा पालन करने में प्रसन्न नहीं है यदि ईश्वर इन वृक्षों में बोलने की शक्ति देदे तो क्या वह यह न कहेंगे कि मनुष्य से बढ़कर कृतघ्नता भूल जाने वाला कोई नहीं है॥

माधवी। जीतसिंह! वृक्ष तो नहीं कहते परन्तु उनकी आड़ में तुम कह रहे हो।

जीतसिंह। हां यदि मैं भी कहता हूं तो सत्य कहता हूं॥

माधवी। मैं तुम्हारी बातों से घृणा करती हूं।

जीतसिंह। और आप की बातों से ईश्वर घृणा करता है॥

माधवी। देखो भली प्रकार विचार कर बातचीत करो।

जीतसिंह। भली प्रकार विचार करलिया है।

माधवी। मनुष्य बनो।

जीतसिंह। दयावान बनो।

माधवी । मेरी प्रभुता जानो ।

जीतसिंह । अपने पिता की प्रभुता को पहचानो ।

माधवी । देखो मूर्खता मत करो ।

जीतसिंह । आपभी धूर्तता न करें ।

माधवी । देखो इसमें मृत्यु का भय है ।

जीतसिंह । अपने स्वामी पर प्राण निछावर है ।

माधवी । पश्चाताप करना होगा ।

जीतसिंह । नर्क में पड़ना होगा ।

माधवी । मेरी प्रभुता को तुच्छ न समझो ऐसी बुद्धि रखने वाले के शीश शीघ्रही उड़ा दिये जाते हैं । देखो जीतसिंह मैं पुनः तुमसे कहती हूं कि यदि तुमने मुझे सहायता न पहुंचाई तो उस स्थान में मृत्यु का दण्ड पावोगे जहां भिखारे स्वान मारे जाते हैं ।

जीतसिंह । मेरा जीवन उसी के हेतु है और मेरी मृत्यु भी उसी के हेतु होगी । मेरा जीव जबलों इस असार संसार में है उसी के नाम पर सदा अपने को निछावर करने को प्रस्तुत रहेगा । और जबलों मेरी आत्मा इस अधम शरीर में रहेगी अपने तार पर सदा उसी के गुण का भजन करेगी । और उस समय जब मेरा गला छूरी से रेता जायगा तब मेरे रक्त की प्रतिधार उसी के चरणों की ओर बहकर जायगी ।

(जीतसिंह का जाना)

माधवी । नरसिंह ! देखा ।

नरसिंह । मैं खेद प्रकट करता हूं ।

माधवी । देखो जी यदि तुमने अपने मूर्ख पिता के

हेतु मुझसे कुछ भी बिमली की तो मैं तुमसे भी रुष्ट हो जाऊँगी।

नरसिंह। ऐ मेरी प्राण आधार मुझसे अपना प्रेम न लौटाना यदि तू अपना चन्द्र मुख एक पल के हेतु भी मोड़ लेंगी तो शोक से मेरी मृत्यु मुझे ग्रसित करलेगी।

(माधवी के पति का आना)

इन्द्रजीत। (स्वयं) कौन माधवी और नरसिंह!

(साइड में होजाना)

माधवी। देखो जी मैं तुम्हें चाहती हूं प्रेम करतीहूं।

इन्द्रजीत। प्रेम क्या प्रेम! (कटार लेकर मारना चाहता है कुछ सोच कर पीछे ठहर जाता है)।

माधवी। प्यारे नरसिंह! यदि मेरा पति मृत्यु के गोद में सो जाता तो (इन्द्रजीत का सामने आजाना)।

इन्द्रजीत। नीच, दुष्टा, पापिन, हत्यारी।

माधवी। मारो २ क्यों डरते हो, क्यों घबड़ाते हो एकही चोट में सदा के हेतु आनन्द मिलेगा।

इन्द्रजीत। चल दुष्ट, नीच, पापी।

माधवी। नरसिंह मारो क्या देखते हो!

(नरसिंह और इन्द्रजीत का लड़ना नरसिंह का गिरना तारा का पीछे से इन्द्रजीत को कटार मारना)

इन्द्रजीत। हाय, ईश्वर!

माधवी। चुप दुष्ट।

* दृश्य २ * कामिकसीन

(घसीटा का गाते हुये आना)

गाना--- देखो मेरा सम्मान भाई मैं हूं रायबहादुर मिला बल्ला और चोगा मुझे कलेक्टर साहब से हां। अब तो मैं सीखूंगा चमचे कांटेसे भोजन करना और यह पुरानी वस्तु भाड़में झोकूँगा मैं। अब सजीले बंगले में रहूँ। टाइटिलवालों से बात करूँ और यह पुराने मित्रों से न बोलूँ मैं॥ देखो ......

अहा हा अब तो सहस्त्रों मनुष्य मुझसे मिन्नती करने आते हैं परन्तु मैं तो किसी से मिलताही नहीं

(घसीटा की स्त्री का आना)

स्त्री। हैं! प्राणनाथ यह क्या स्वांग रचा है।

घसीटा। अरे तू कौन है निकल यहां से; तू यहां क्यों आई?

स्त्री। खेद है कि आप अपनी विवाहिता स्त्री को भी भूल गये। यदि आपको ऐसाही था तो मुझसे ब्याह क्यों किया?

घसीटा। जिस समय तुझ ऐसी फूहड़ से मेरा विवाह हुआ तो उस समय मैं केवल घसीटवा चमार था।

स्त्री। और अब?

घसीटा। अब सरकार से राय बहादुर की डिग्री मिली है।

स्त्री। राय बाहादुर अथवा राई, नोन, बन्दर?

घसीटा। आव यू फूल रास्कल काली डाइन (स्त्री का आना) (स्वयं) या परमेश्वर! इससे भी किसी प्रकार अपना पीछा छुड़ाना चाहिये नहीं तो जिस समय यह पुनः आयेगी तो हमारे मित्र लोग मुझे गवांर जोरूबा-ला समझेंगे। [सर फौक्स का मित्रों सहित आना]

फौक्स। वेल मिस्टर रायबहादुर गुडमौर्निङ्ग।

घसीटा। (स्वयं) हाय २! अब मैं इसका उत्तर क्या दूं बेटा घसीटा ?

फौक्स। हैं! आपको घसीटा किस मूर्ख ने ? बतलाइये उसका नाम मैं अभी उसपर केस चलाऊं और कमसे कम १० वर्ष की फांसी दिलवा दूं!

घसीटा (स्वयं) मैं कहता कुछ और हूं और ये लोग समझते कुछ और हैं गुडमौर्निङ्ग आपका इस समय आना क्योंकर हुवा!

सब। (फौक्स) हमलोग इस समय इस हेतु आये हैं कि आप अपने पुत्री का विवाह किसके साथ कीजियेगा?

घसीटा। जिसकी टाइटिल सब से ऊँची होगी।

आ. मजिस्ट्रेट। ऊँची कैसी; क्या जो कोई सबसे लम्बा हो ?

घसीटा। नहीं जो सरकार में सबसे अधिक सम्मानित हो।

आ.म.। तो मैं तो अधिक सम्मानित हूं।

एडिटर। नहीं महाशय मैंहूँ, क्योंकि संसार भर में मैं पत्रों का व्यवहार रखताहूँ।

स्र। पर भाई मेरी पदवी तो स्र की है।

घसीटा। तो तुम्हीं से मैं अपनी पुत्री का ब्याह करूँगा।

सब। और तब हम सब क्या करें?

नौकर। विश्वेश्वरगंज मे जाकर भुट्टे बेंचो?

सब। तो क्या एडिटर इत्यादि भुट्टे बेंचते हैं?

नौकर। जी हां आज कल वे लोग टके सेर बिकते हैं।

(मदन गोपाल का आना)

सब। चुप यू फूल।

मदन। प्रणाम महाशय।

घसीटा। कौन हो, कहां से आये हो, क्या चाहते हो, किसने आने को कहा, क्या इच्छा है?

मदन। महाशय! सब का एक साथ उत्तर दूँ अथवा अलग २?

घसीटा। एक साथ, एक साथ।

मदन। अच्छा तो रायबहादुर और मजिस्ट्रेट जेन्टलमेन! मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि आपलोग अपना समय मेरी स्पीच सुनने में वेस्ट करने को उद्यत हैं।

सब। हैं २! स्पीच कैसी? उत्तर दो उत्तर स्पीच को किसने कहा?

मदन। अच्छा मैं अपने श्वसुर श्री घसीटासिंह जी से यह पूछने आया हूँ कि वह अपने पुत्री का बिवाह मेरे साथ किस तिथि को करेंगे?

स्र। हैं! दामाद तो मैं हूं फिर यह कहां से टपक पड़ा?

घसीटा। चला जा यू फूल तुझ ऐसे रास्कल क

अपना दामाद कौन बनायेगा?

मदन। देखो श्वसुर जी! यदि आप ऐसा कहे

तो मैं एक दम चला जाऊँगा।

घसीटा। जा २ यू फूल एक दम चला जा। तुम

यहाँ किसने बुलाया है?

मदन। तो क्या मेरे साथ आप अपना ब्याह न करेंगे

घसीटा। अबे तेरे साथ क्या तेरे बाप के साथ

न करूँगा।

मदन। क्यों?

घसीटा। क्योंकि तू टाइटिल वाला नहीं है।

मदन। अजी ऐसे टाइटिल वालों को तो मैंने ब

देखा है, यहां टाइटिल वाले कहलाते हैं और घर

भूख २ चिल्लाते हैं।

घसीटा। मुझे इनसे कुछ काम नहीं; मुझे तो मेर

टाइटिल वाला चाहिये।

मदन। तो मैं भी टाइटिल वाला हूँ।

घसीटा। क्या!

मदन। सिर फोड़ डंडेबाज।

घसीटा। चला जा यू फूल-रास्कल-डाम।

[सब का जाना]

मदन। अच्छा कहां जावोगे अंत में मैं तुम्हे ऐ

छकाऊँगा कि जीवन पर्यन्त स्मरण रक्खोगे। (जाना

॥ ❀ दृश्य ३ * ॥

(जीतसिंह और नरसिंह का आना)

जीतसिंह । देखो अन्त में दुष्टों ने अपने पिता को पागल बनादिया ।

नरसिंह । बड़ी दुष्ट बाम हैं ।

जीतसिंह । कुछ चिन्ता नहीं ईश्वर का कोप कमला के स्वरूप में आया है वह उनसे उसका कसर लेगी ।

नरसिंह । अब महाराज कहां हैं ?

जीतसिंह । दुर्ग में जैसे कमला के हित लिखवा दिया है देखो नरसिंह हम और तुम उस बिचारे की सहायता करें ।

नरसिंह । आपका कहना यथार्थ है ।

जीतसिंह । अब उन्होंने अपनी सेना का सेना-पति किसको बनाया है एक तो तुम हो और दूसरा ।

नरसिंह । दूसरा [illegible]सिंह ।

जीतसिंह । तुम [illegible] हो इस हेतु वही करोगे जो पिता की अभिलाषा [illegible] । अब तथा घसीटा उसे मेरा यह पत्र देकर (पत्र देता है) शीघ्र लौट आवो ।

(जीतसिंह का जाना)

नरसिंह । यह पत्र ज्यों का त्यों माधवी अथवा तारा को जाकर सुनाता हूं । चल नरसिंह इस भांति बूढ़ों की मूर्खता से सिद्धान्तों के युवा अवस्था में लाभ

पहुंचता है। (अमरसिंह का जाना) जीत का आना।

जीतः। हाय ! देखो महाराज पुनः पागल बने दुर्ग से बाहर चले आये। (सुरेन्द्र का पागलों की भांति आना)

सुरेन्द्र। ह नेत्रों के दोष अधिक समझते हैं धनवानों में उनसे अधिक दोष रहते हैं पर वे उनके धन के नीचे दबे रहते हैं।

जीतसिंह। हे प्रभु ! ईश्वर ! इन दुष्टों का नाश कर दे।

सुरेन्द्र। मैंने यह शब्द कहीं सुना है।

जीतसिंह। प्रभो मैं श्रीमान का दास हूं।

आनन्द। ऐसी दशा तो एक दूसरे मनुष्य की भी नहीं देखी जा सकती है

जीतसिंह। अब मेरे नेत्र आंसू बहकर बहजायेंगे

सुरेन्द्र। है क्या तू रो रहा है ! तो रो यदि तुझे मेरे भाग्य पर रोना हो तो यह मेरे नेत्र ले और धैर्य रख। हां कभी सांसारिक नाटकों में कोई गीत सीखा है

आनन्द। हां प्रभो एक जीवन का दोहा याद है

सुरेन्द्र। सुना।

आनन्द। गाना

उड़ गई चिड़िया लुढ़कता रह गया यह धड़ कहीं हैं जनक रोते कहीं और प्रेमिका रोती कहीं। जिस समय यह भाफ का इंजन फड़कता गर्व से देखते थे भी नहीं कि मृत्यु आवे न कहीं। अब ज्यों आई मृत्यु क्यों ढीला किया तूने हाथ पांव, क्योंन कहता गर्व से अ

मृत्यु भी है कुछ कहीं ?

सुरेन्द्र। यहीं है यहीं है सिपाहियो पकड़ लो।
न्यायकर्ता न्याय कीजिये मैं असत्य नहीं कहता। इसका
नाम माधवी है। इसीने अपने वृद्ध पिता को ठोकरों
से मारा है (आनन्द से) हैं तू चुप किस कारण होगया ?

आनन्दसिंह। भीम द्रोणाचार्य सदृश और यहां से
चल बसे, चिन्ह है उनका नहीं ढूंढा सदा कि कुछ
कहीं। पर न पाया अबलों, फिर तू गर्व क्यों इतना
करे ? है सुना मीठा यह फल, हे गर्व का भी यहां कहीं।

सुरेन्द्रसिंह। यह देखिये। वह दूसरी भी आई
इसका नाम तारा है। इसकी बिगड़ी हुई मूर्ति से
इसकी दुष्टता का वारा न्यारा है। क्या वह भी भाग
गई ? (आनंद से) हैं तू तो कुछ गुन गुना रहा था।

आनन्दसिंह। (गाना) गूंजते थे जिनके डन्कों
से पृथ्वी वो स्वर्ग धाम। चल दिये आनन्द से 'आनंद'
यहां कुछ भी नहीं।

सुरेन्द्रसिंह। कुछ नहीं ? न्याय को धन ने लेलिया।
न्याय कर्ताओं को घूस दी गई हैं। तुम सब चोर हो
(कमला का गोपालसिंह सहित आना) हैं छोड़दो
मुझे छोड़दो। तुम सब लुटेरे हो डांकू हो।

कमला। यही है तनिक सावधानी से ले चलो।

सुरेन्द्रसिंह। छोड़ दो मुझे छोड़ दो। अरे कोई
बचाने वाला नहीं मेरे दशा पर दया दिखाने वाला नहीं।

कमला। पिताजी आप दुर्ग में पधारिये मैं आपकी
दासी बन कर रहूंगी।

सुरेन्द्र। मुझे न [illegible] मैं बड़ा बूढ़ा हूं। मेरी अवस्था ६० वर्ष से भी अधिक है। मुझे मूर्ख समझ हंसना नहीं। मैं जानता हूं कि तू मेरी पुत्री कमला है।

कमला। जी हां मैं वही हूं आप मुझे आशीर्वाद दीजिये।

गोपाल। [illegible] रहो जो यहाँ कहें।

सुरेन्द्र। (हाथ [illegible]) [illegible] जो जाती शत्रुओं के [illegible] है। [illegible] नहीं हटेंगे। नहीं [illegible] प्राण [illegible] दुर्ग पर तुम्हारी [illegible] करेंगे। यह है दोनों पकड़ लो। बांध लो। (भाग जाना)

कमला। हाय! सन्तान ने पिता की अवस्था किस भांति पलट दी!

गोपालसिंह। ऐसी दशामें मनुष्य के पागल हो जाने में कोई संदेह नहीं रहता।

कमला। परन्तु यह तो आश्चर्य है कि यह अभीतक जीवित किस प्रकार रहे?

जीतसिंह। महाराज अब इस प्रकार रक्षा कीजिये कि यह दुर्ग से बाहर न जांय। जिस समय से आपने दुर्ग पर विजय प्राप्त कर ली है तब से शत्रु के दल इसकी चारों ओर घूमा करते हैं।

गोपालसिंह। अब वह एक तिनका भी पृथ्वी मुझ से ले नहीं सकते। मुझे केवल अपनी बची हुई दल का ध्यान है फिर तो यह दल क्या, उनके हेतु अपने बचे हुये देश का भी बचाना कठिन हो जायगा।

आनन्द व मीत। ईश्वर आपको विजयी करे।

कमला। यह अवश्य करेंगी। मेरा प्यारा कुछ लालच के हेत नहीं परन्तु केवल मेरा मित्र . . . .

गोकलसिंह। और धर्म मुझे यहां लौं खींचलाया

आनन्द। हे प्रभो दीनानाथ आप इनकी सहा-यता कीजिये। सब अवश्य करेंगे (सब का जाना। केवल आनन्द का रह जाना और गाना।

हृदय को शोक का बैरी, पाया यह कैसा है संसार जो मित्र यहां कहलावें; शत्रु का धरने किवाड़ें। पर धर्म को नहीं पाया, यह सब झूठा है प्यार॥ (जावेगा)

॥ * दृश्य ४ * ॥

तारा। मुझे ज्ञात होता कि इस पत्र को लिखते समय उस मूढ़ ने अपने अंतिम परिणाम की ओर ध्यान न दिया।

नरसिंह। मैं स्वयं अचंभित हूं। और शोक है इस शीघ्र की, कि स्वामि भक्ति हेतु मैंने अपने पितृ धर्म की कुछ चिन्ता न की।

तारा। तो क्या ऐसे दुष्ट को कोई कठिन दण्ड न देना चाहिये?

नरसिंह। क्यों नहीं परन्तु . . . .

तारा। क्योंकि वह तुम्हारा पिता है।

नरसिंह। यदि वह मेरा पिता न होता तो मैं

स्वयं अपने हाथों से उसे फांसी दे देता।

तारा। कोई चिन्ता नहीं यह काम हम तुम्हारे हेतु स्वयं कर लेंगे।

नरसिंह। मैं भी कैसा भाग्यहीन हूं। यह सब जानते हैं कि मैंने किस भक्ति से आपकी सेवकाई की है परन्तु यही फिर मुझे कलंकित करेंगे।

तारा। प्यारे नरसिंह मैंने अपना हृदय को पति का था तुम्हे अर्पण कर दिया और ईश्वर तक की भी कुछ चिंता न की और तब हम मनुष्यों से कब डरते हैं ? (माधवी आती है)

माधवी। मैंने दुष्ट सीतसिंह को पकड़ने के हेतु अपने जासूसों को भेज दिया है।

तारा। तो वह अब बच नहीं सकता।

माधवी। यदि वह यहां आया तो मैं उसकी हड्डियां नुचवा दूंगी।

तारा। और मैं उसकी हड्डियां कुचलवा दूंगी।

माधवी। और मैं उन्हे जलाकर राख कर दूंगी।

तारा। और मैं उस राख को ठोकरों से उड़ा दूंगी।

नरसिंह। महा भागे। न्याय तो ऐसे अपराधी को इससे भी कठिन दण्ड की आज्ञा देता है। परन्तु आप दयावान हैं इस हेतु तनिक दया कीजिये। यदि ऐसा नहीं हो सकता तो मुझे आज्ञा दीजिये क्योंकि मैं अपने पिता की बुराई का परिणाम पाते हुये देखूँगा तो मुझे लज्जा आयेगी। (जाता है)

तारा। कितना सुशील है।

माधवी । यह उतनाही कुशील है जितना कि उसका पिता नीच और दुर्जन (जीतसिंह को अपराधी कह कर लाते हैं) इधर आ नीच मूर्ख ।

तारा । क्यों रे नीच सेवक ।

माधवी । दुर्जन । वृद्ध स्वान ।

जीतसिंह । धर्म को अपमानित न करोतुम्हारा पितासज्जन है और तुम्हारी माता भी सज्जन थी और मैं भी सज्जन हूं इस हेतु तुम भी सज्जन बनो और सज्जनता से बात करो ।

माधवी । तू स्वान से भी अधिक नीच है ।

जीतसिंह । इसका क्या प्रमाण है ।

तारा । यह दुर्जन, घात करने वाला और लूटा है ।

जीतसिंह । सत्य है क्योंकि मैंनेही तो चाटुकारी करके अपने पिता को लूटा है ।

माधवी । नीच ! तूने सुरेन्द्र को कमला के ढिग किस हेतु भेजा था ?

जीतसिंह । इस हेतु कि मैं नहीं देख सकता था कि तू उस वृद्ध के शरीर को कष्ट पहुंचाये अथवा अपने नखों से उसकी भिरुरी पड़े हुये देह को नोच २ कर खाये।

माधवी । चुप नीच ।

जीतसिंह । ओ दुष्ट लड़कियो ! भयानक बन, डरावनी रात्रि, बिजली, आंधी, पानी, पाला, इन सब को धिक्कार थी और उसमें एक वृद्ध खिसकता २ इधर उधर ठोकर खारहा था, तू और तेरे सहचर दुष्ट से

निद्रा देवी की गोद में सोरहे थे। मैं आया गिड़गिड़ाया समझाया परन्तु तुमने पिता पर तरस न खाया। इतना भी नहीं कहा कि द्वार खोल दो और आंगन में बुला लो। ओ अंगलियो रागारियो यदि इस समय कोई मेरे द्वार पर आकर कुण्डा खटाता तो मैं अपने सेवक से कहता कि जा द्वार खोल दे और उसे भीतर बुला ले।

माधवी। तो मैं ऐसे दोष पर तेरी हड्डियां पक्षियों से नुचवाऊँगी।

तारा। (अपने सहचर से) इसकी जिह्वा काटलो

जीतसिंह। हां रे शीघ्रता करो वरन तुम्हारे कुल दोष प्रगट हो जायेंगे।

माधवी। पत्र लिख कर दूसरों के सेनाध्यक्ष को बहकाना क्या नीच कर्म नहीं है?

जीतसिंह। एक भोले भाले मनुष्य को सर्पिणियों से बचाना अधर्म नहीं है।

तारा। वह मूर्ख है।

जीतसिंह। और तू नीच है।

माधवी। वह नर्क के हेतु है।

जीतसिंह। और तू अपयश की भागी है।

तारा। तू वृद्ध के भेष में दैत्य है।

जीतसिंह। और तू स्त्री के भेष में सांपिन है।

माधवी। नीच तू ऐसा निडर हो बात करता है।

जीतसिंह। और क्या जिसे ईश्वर का भय है वह ऐसे तुच्छ मनुष्यों से नहीं डरता।

माधवी। तू! और ऐसी निडरता।

जीतसिंह। पुत्री और पिता से निठुरता।

माधवी। ठहर नीच (बधिक से) मार एक हाथ ते इसका शीश मेरे चरणों पर लुड़के।

जीतसिंह। ऐ देवताओं सुनना, हे वृक्षों सुनना तो मेरे साक्षी रहना। आज मैं अपने स्वामी के अपना धर्म निवाहता हूं (बधिक से)। चल बढ़ शीश झुका है मार हाथ।

बधिक। है आज्ञा ?

माधवी। पूछता क्यों है।

तारा। उड़ादे शीश। (तारा के पति का बधिक भीतर से गोली मारना)

बधिक। हाय . . . . . म . . . . . रा।

माधवी। यह क्या किया !

गुलाबसिंह। यह किया जिसके योग्य यह था।

तारा। परन्तु यह क्या आप का अपराधी था ?

गुलाबसिंह। नहीं तो क्या यह तेरा दोषी है ?

तारा। अवश्य यह मेरा दोषी है।

माधवी। इसने मुझसे घात किया है।

गुलाबसिंह। और तुमने अपने पिता से घात किया और ऐसा घात जिसे सुनकर दैत्य भी कांप उठता है।

माधवी। मुझे तुम्हारी बुद्धि पर शोक होता है।

तारा। तुम बड़े मूर्ख हो; तुम्हारा हृदय कातुरता व निर्लज्जता के हेतु बना है।

गुलाबसिंह। बुद्धि की बातें और उपदेश मूर्खों को सदा बुरी लगती हैं। तुमने क्या किया; तुमने उस

बिचारे वृद्ध के मांस को नोच २ कर खालिया ।
तुम उसकी पुत्री नहीं हो ? क्या वह तुम्हारा पिता
है ? ऐसे वृद्ध पुरुष को जिसके केश श्वेत हो ग
और जिसको रीछ भी देखकर शीश झुकाता है ।
नीचों ने उसे पागल बनादिया । यदि इसके हृद
दया आई और उसके रक्त ने अपना स्वामिभक्त
पालन करना चाहा तो इसने क्या अपराध किया ?
लज्जा नहीं आती कि तुमने पुत्री होकर उसकी
यतानकी और वह पराया होकर अपने प्राण
निछावर करने को उद्यत है ।

जीतसिंह । हे परमेश्वर ! इनके हृदय में
उत्पन्न कर दीजिये ।

माधवी । चुप पाजी, क्या यह न्याय नहीं है
तू मारा जाय और नरसिंह को; जिसने हमपर तेरा
हाल प्रगट कर दिया सम्मानित किया जाय ।

जीतसिंह । हाय परमेश्वर ! मैं यह क्या सुन र
क्या मेरा पुत्र होकर अपने पिता ही की यह दशा
वा रहा है ? हाय; हाय, अब मेरे नेत्र खुल गये नि
बीरेन्द्र पर उसने ही ऐसा भयानक अपराध लगाया

तारा । ऐसी बुद्धि किस काम की जो यह भी
देख सकती कि ऐसी भलाई करने से क्या बुराई हो

गुलाबसिंह । तूभी तो देख कि राक्षसियों मे
ऐसी नीचता नहीं है जितनी स्त्रियों में है ।

माधवी । कैसा डरपोक है एक शब्द भी बी
का मुख से नहीं निकालता ।

गुलाबसिंह । तू मुझे क्यों व्यर्थ क्रोध चढ़ाती है ? तू स्त्री न होती तो मैं तेरी बोट २ पृथक कर । सिपाहियों ! छोड़दो इसे ।

तारा । यह नहीं छुट सकता ।

गुलाबसिंह । मैं कहता हूं इसे छोड़ दो ।

तारा । और मैं भी कहती हूं कि यह कदापि नहीं सकता ।

गुलाबसिंह । (सिपाहियों से) तुमने नहीं सुना ?

माधवी । वह कदापि नहीं सुन सकते ।

गुलाबसिंह । मैं आज्ञा देताहूं कि इन्हे बंदी करलो ।

तारा । और मैं आज्ञा देती हूं (सिपाहियों से) .. तू इसका शीश काट ले । (तारा के आज्ञा से .पाही का बढ़ना)

.लाबसिंह । ठहरो नीचो (गुलाब सिंह का बधिक को .रना तारा का पति को मारना)

गुलाबसिंह । हाय ।

जीतसिंह । हाय २ यह क्या होरहा है ?

माधवी । ठहर दुष्ट तू कहां जाता है ।

(माधवी का जीतसिंह को गोली मारना)

जीतसिंह । हाय···प···र···मे···श्व···र ।

---

* दृश्य ५ वां *

(नरसिंह का सेना को व्यूह कराना)

गाना--

चलो रण करें, पूरा प्रण करें, प्रहण करें ; क
करें, मारो २ काटो २ तलवार धरी यमपुर पठ
बीरता अरु धीरता अरु शूरता दिखायें । अ
अधीरता को नाम से बहायें । हां १ बीरता से
स्वर्गलोक । गाना ।

॥ * दृश्य ६ * ॥

माधवी और कमला के सिपाहियों का लड़
माधवी के सिपाहियों का सुरेन्द्रसिंह को संदी
लाना कमला का सुरेन्द्रसिंह के शरीर से लिपटना

नरसिंह । सावधान ।

दृश्य ! लो ।

(नरसिंह का प्रसन्नता में बैठे दिखाई
वेश्याओं को गाना) गाना

सैयां को मिलन को मैं कैसे २ जाऊँ । अब
राह रोके पहरवा । लाखन गारी मोका देत पहरू
बिनती करत मैतो वाका समझाऊँ (गाकर जाना

नरसिंह । वाह २ सांगीत भी क्या वस्तु
कोई कैसाही दुखी क्यों नहो इसको सुनकर प्रफु
हो जाता है । परन्तु मेरा हृदय तो अत्यन्त प्रसन्न
होगा जब मेरे शीश पर सुरेन्द्र का छत्र इस हा

का अधिकार और दुर्ग में मेरा बश । ऐ मेरी
ा काहे को चिन्ता करती है यदि आज मेरा दांव
गया तो कल यह कुल मेरे अधिकार में आजायेंगे ।
धवी आती है)

माधवी । प्यारे !

नरसिंह । महारानी हैं !

माधवी । क्यों नरसिंह देखो तुमने फिर मुझे इसी
 पुकारा । यदि महारानी अथवा प्रभो कहकर
पुकारोगे तो मै रुष्ट हो जाऊँगी ।

नरसिंह । क्यों प्यारी इस भांति आप का प्रतिष्ठित
उच्चारण करने में क्या हानि है ! यदि कोष में
शब्द न रहते तो नरसिंह को किस प्रकार ज्ञात
ा कि इसका हृदय प्यारी माधवी के प्रेम में मग्न है।

माधवी । वाह तब तो ज्ञात हुवा कि तुम्हारे
य में मेरी केवल प्रतिष्ठा ही है कुछ प्रेम नहीं है ।

नरसिंह । नहीं प्रतिष्ठा और प्रेम दोनों ।

माधवी । तो क्या आधे हृदय में प्रतिष्ठा और आधे
प्रेम !

नरसिंह । हां ।

माधवी । हां, यदि कुल हृदय में मेरा प्रेम होता
तारा के प्रेम को कहां रखते ।

नरसिंह । नहीं २ ऐसा कदापि नहीं है ।

माधवी । देखो नरसिंह, मै तुम्हे पुनः चिताये
हूं कि यदि तुम्हारा हृदय तारा अथवा और
सी के प्रेम में मग्न होगा तो यह कटार जिसने एक

समय पतिके गले को काटा था सब से प्रथम एक प्रेमी के रक्त पीने को उद्यत होगा।

नरसिंह। (स्वय) हाय बापरे (प्रकाश) प्यारी तुम्हारा हृदय भी कैसा छोटा है। हां, प मैंने जो कल बात कही थी कुछ उसका भी ध्यान

माधवी। हां नरसिंह मैं रात्रि भर बिचारती परन्तु मेरे बिचार में कोई बात न आई, तुमहीं कुछ क

नरसिंह। अच्छा तो मैंहीं बताऊँ (इधर देखकर) कोई देखता तो नहीं!

माधवी। नहीं।

नरसिंह। सुरेन्द्र सिंह और कमला को मरवाडा

माधवी। परन्तु कदाचित तारा इस में अनुमो न करे।

नरसिंह। करे, वह तो कदापि न करेगी। दे प्यारी यदि तुम यह चाहती हो कि राज्य में भ लेने वाला दूसरा कोई न हो और अपने प्रेम का बाधक नहो तो यह करो।

माधवी। क्या!

नरसिंह। देखो मैंतो तुमसे प्रथम कह चुका कि प्रजा को ज्ञात हो चुका है कि कि सुरेन्द्रसि और कमला बंदी हैं और वे इसी बिचार मे कि लड़कर उन्हे छुडायें यदि ऐसा हुवा तो हम लो का अन्त ही है। इस हेतु आज रात्रि में मैं दो व कों को भेजकर सुरेन्द्रसिंह को मरवा डालूं और तु स्वयं जाकर कमला को अपने हांथों से इस संसार

उठा देना जिसका दोष तारा पर लगाया जायगा। इस भांति सुरेन्द्र बधिकों के हाथों से; कमला तुम्हारे हाथों से और तारा प्रजा के हाथों से मारी जायगी। तब तो अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त होगी।

माधवी। अच्छा तो मैं जाती हूं।

(तारा का आना, दोनों को भीतर जाते देखना)

तारा। हां [नरसिंह का आना] आज कल तो अच्छी भांति घुल २ कर बातें होती हैं।

नरसिंह। अभी चूल्हे में गई बातें।

तारा। क्यों! क्या है कुशल तो है।

नरसिंह। अजी कैसा कुशल रक्त, रक्त.।

तारा। कैसा भयानक रक्त, क्या किसी का रक्त बहाया जायगा!

नरसिंह। और किसी का नहीं परन्तु तुम्हारा प्यारी तुम्हारा रक्त।

तारा। मेरा रक्त परन्तु मेरे रक्त का कारण॥

नरसिंह। यह तो सब को ज्ञात है कि प्रजा सुरेन्द्रसिंह और कमला को बंदी जानती है इस हेतु छुड़ाना चाहती है। सो माधवी को यह विश्वास है कि यदि वह दोनों बंदी गृह से छूटैंगे तो शीश और छत्र दोनों जाते रहेगें। इस कारण सुरेन्द्रसिंह को बधिकों के हाथों से मरवावेगी और कमला को स्वयं मारेगी और इसका दोष तुम पर लगाएगी।

तारा। हां; इस भांति नीचता और कृतघ्नता।

नरसिंह। अब तो भली प्रकार समझ गई होंगी।

तारा। यही कि सुरेन्द्र को बधिकों के हाथों से और कमला को अपने हाथसे और मुझे बिगड़ी हुई प्रजा के हाथों से मरवायेगी।

नरसिंह। और स्वयं राज्य की स्वामिनी बन जायेगी परन्तु तुम उस सांपिन को डसने का अवसर ही क्यों दो क्या ऐसा नहीं होसकता कि जिस समय उसकी छुरी कमला के रक्त में डूब चुकी हो तो तुम वहां तुरन्त पहुंच जाव और हल्ला करके उसे पकड़वा दो और आज रात्रि जिस प्रकार मुझसे होगा मैं तुम्हें सहायता पहुचाऊँगा। और प्रातः काल इस राज्य की महारानी बनने की बधाई देने आऊँगा (स्वयं) स्मशान पर।

तारा। अच्छा तो मैं जाती हूं और इसकी टटोल लगाती हूं। (जाना)

नरसिंह। वाह रे नरसिंह; कैसी चाल खेला पर यह तो ज्ञात हुई है कि माधवी तारा से अधिक बलवान है यदि यह उससे लड़ने हेतु जायगी तो केवल एकही लपड़ में पृथ्वी सूंघने लगेगी। तो फिर कौन बचा केवल मधवी सो वह कल मेरे हाथ से एक ही गोली में यमपुर चली जायगी। फिर तो केवल अकेला मैंही इस राज्य का स्वामी हूंगा।

---

* दृश्य २ * बन्दीगृह ॥

(पलंग पर सुरेन्द्र का लेटे हुये दिखाई पड़ना और

कमला का हाथ रक्खे हुये सिर नीचे किये गाना)

गाना ।

कमला । ऐ भाग्य अब दया कर हमें क्यूं सता रहा है । हँसे किस समय थे इस भांति जो अब तू रुला रहा है ।

सुरेन्द्र । दरिद्र, बृद्ध, सहायता हीन, दया २ ।

गाना ।

कमला । मैं कैसी कर्म हीन हूं । कि कौड़ी की तीन तीन हूं । ऐ मेरे प्रभो मैं क्या हूं, जो यह दृश्य सता रहा है ।

सुरेन्द्र । पकड़ो, मारो, बधिकों इन्हीं दोनो ने मुझ ऐसे बृद्ध को ठोकरों से मारा है इन्हीं दोनों ने बल पूर्वक मेरे शीश से मुकुट उतारा है । गाना ।

कमला । बचे एक भी न आंसूं । वहे हृदय से रक्त तक भी । रोयें क्या यह बिचारी आखें; कि अब इनमें क्या रहा है । (दो बधिकों का आना)

१ बधिक । सोता है ।

२ बधिक । बोल ।

१ बधिक । मार ।

२ बधिक । क्या निद्रामें ?

१ बधिक । तो क्या जगावोगे ?

२ बधिक । लो जागी ।

कमला । तुम, तुम, तुम कौन हो ?

१ बधिक । हल्ला न करो ।

२ बधिक । इधर पग धरो ।

कमला । तुम क्या चाहते हो तुम्हारी क्या अभि-

लाया है ? ठहरो मैं पिता को जगाती हूं ।

१ बधिक । अब वह जाग नहीं सकता ।

कमला । तुम्हारे नेत्रों से मुझे भय होता है तुम कौन हो बतावो ?

१ बधिक । दो मनुष्यों के भेष मे " मृत्यु "

कमला । हैं मृत्यु ! किसकी ?

१ बधिक (सुरेन्द्र दिखाकर) इसकी ।

कमला हैं । ! इसकी क्या तुम इनको मारने आये हो ? इनसे क्या अपराध हुवाहै इन्हे क्यों कर दोषी ठहराते हो ?

१ बधिक । बिना अपराध ।

कमला । तो फिर इस वृद्ध को किस कारण मृत्यु की गोद में सुलाते हो । क्या इस हेतु कि यह निरपराध है ?

बधिक । चुप रहो; चुप रहो; जिस समय हमलोग अपने छुरी की परिक्षा करने आते हैं तो उपदेश सुनने वाले कान साथ नहीं लाते ।

कमला । परन्तु आखों को तो साथ लाते हो ।

बधिक । परन्तु वह केवल एक तड़पते हुये शरीर के और कुछ नहीं देख सकती और . . . .

कमला । परन्तु थोड़ी देर के हेतु तुम उन्हे विवश करो कि तुम्हारी आत्मा की भलाई पर भी सोचें मेरे भाइयो ! यह वृद्ध पुरुष जोकि कल महाराजा था और तुम लोग जिस के सहचर थे आज उसके बैरी हो गये हो । यदि इसको मार डालोगे तो क्या फल पावोगे

जो बलथा इस बृद्धावस्था ने लूट लिया । जो सम्पति थी वह दुष्ट पुत्रियों ने लूट लिया और अब मुट्ठी भर हड्डियां और एक सिसकती हुई सांस बचीहैं जो तुम्हारे किसी भांति लाभ दायक नहीं है हड्डियां जल कर राख हो जयेंगी श्वास हवामें मिल जायेंगी । प्राण ईश्वर के पास चले जायेंगे । और यदि कुछ बचेगा तो मेरे हेतु रोने को और तुम्हारे हेतु नर्क के दण्ड ।

बधिक । हमको इस कार्य से हटाने के हेतु यदि कोई नर्क में भी लेजाये और लौटा कर लाये तो भी हम यह काम अवश्य करेंगे ।

कमला । क्या ? क्या ! शोक ! तुमने जतादिया कि तुम मट्टी नहीं पर पत्थर के बने हो । मेरे भाइयो मैं राज कुमारी हो कर तुम से भिक्षा मांगती हूं ।

बधिक । चुप रहो ।

कमला । देखो मेरीओर देखो ।

बधिक । (खींचकर) इधर आव ।

कमला । सुनो मेरी सुनो ।

बधिक । मैं कहताहूं चुप (सुरेन्द्र का जागना)

सुरेन्द्र । कोन ! कौन ! तुम कौन ! छोड़ दो मेरी कमला को नहीं तो मैं अपने नहों से तम्हारा मुख (एक का मुख बंद करदेना दूसरे पकड़ना)

बधिक । पकड़लो (लेजाना)

कमला । हांय २ नीचों क्या करते हो मेरा बृद्ध पिता (अचेत होना माधवी का आना)

माधवी । सोती है (अलग होकर) जागी [छिप-

आना]

कमला। लेगये, भेड़िये आकर बिचारे पिता को लेगये।

माधवी। (स्वयं) मूर्ख अभी लों पिता को स्मर्ण कर रो रही है।

कमला। आकाश देख रहा था। पृथ्वी सुन रहीथी परन्तु किसीने दया नकी किसी ने न बचाया।

माधवी। उन्होने बहुत अच्छा किया और अब तुझको भी कोई न बचायेगा।

कमला। कौन? कौन? माधवी मेरी प्यारी बहिन दौड़ो २ नहीं तो वह बृद्ध

माधवी। कौन बृद्ध?

कमला। क्या तू नहीं जानती अरे वही बृद्ध जिसके कारण आज तू राजकुमारी कहलाती है।

माधवी। क्या तेरा पिता?

कमला। तो क्या वह तेरा पिता नहीं, क्या इस शरीर में उसका रक्त नहीं क्या उससे मैंही जन्मी और तू नहीं? बहिन! मेरी प्यारी बहिन तू उसकी दया को इस भांति न भूलजा; उसके प्रेम को तनिक तो स्मरण कर। यदि कुछ नहीं कर सकती तो केवल इतना कर दे कि उनके हाथों से उसके प्राण छूट जायें

माधवी। हां २ उसे वह छुड़ाने कोही ले गये हैं

कमली। नहीं वह तो उसे मार डालेंगे।

माधवी। हां वह उसी का भागी है

कमला। नहीं प्यारी बहिन, दया करो दया

माधवी । (ढकेलकर) बस बस चुप रह यदि अधिक बोलेगी तो तेरी जिह्वा काट लूंगी ।

कमला । यदि जिह्वा काट डाले गी तो मैं नेत्रों के सैन द्वारा समझाऊंगी ।

माधवी । वह तो फोड़ दी जायेगी ।

कमला । तो मैं अपना शीश उसके हेतु तेरे चरणों पर झुकाऊंगी ।

माधवी । वह भी पृथक कर दिया जायगा ।

कमला । हाय २ इतनी तू कठोर हृदय है ।

माधवी । यह तो एक खिलवाड़ है ।

कमला । तो क्या मुझेभी मारेगी ।

माधवी । हां यह छुरी (छुरी दिखाकर) अपनी धारों से तेरे शीश को भी उतारेगी ।

कमला । कारण ?

माधवी । बिनाकारण ।

कमला । अपराध ?

माधवी । बिना अपराध ।

कमला । दया २ ऐ बहिन केवल दया ।

माधवी । बस हो चुका । शीश झुका ।

कमला । हेप्रभो । (भीतर से शब्द होना)

माधवी हैं । यह शब्द कैसा कोई देख तो नहीं रहा हैं तनिक देखूं तो (कमला से) सावधान हिलना नहीं ।

कमला । हाय २ कोई तरस खाने वाला नहीं दया दिखाने वाला नहीं कहां जाऊं हां यहां छिप

जाऊं।

(कमला छिप जाती है–तारा और नरसिंह आते हैं)

तारा। चौकी तो खाली है।

नरसिंह। कदाचित कमला को वह दूसरी कोठरी में लेगई हो।

तारा। तो मैं यहां हीं हूं जिस समय वह रक्त में डूबी निकलेगी मैं हल्ला मचाऊँगी और तुमभी आकर मेरी सहायता करना। (नरसिंह का जाना) मैं तनिक सोरहूं नींद मुझे किस कारण आती हैं। (देखकर) हां वह आती है इसपर लेट जाऊं।

(माधवी का आना)

माधवी। कोई नहीं है अब अपना काम करना चाहिये (कमला के धोके में तारा को पिस्तौलमारना)

तारा। हाय। मरी। दुष्टा (कमला का आना) हे परमेश्वर (भागजाना)

माधवी। कौन कमला यह कौन तारा मैं क्या देखतीहूं।

तारा। जो ,,तू...चाहती...थी।

माधवी। मैं क्या चाहतीथी !

तारा। यही कि कमला का रक्त बहाये और उसके रक्त में मुझे स्नान कराये।

माधवी। तारा तू धोका खाती है। हैं यह क्या है (नरसिंह का आना)

तारा। (नरसिंह को देखकर) धोका नहीं। नरसिंह तुम चुप क्यों खड़े हो। (नरसिंह का डरना)

नरसिंह । हाय ! हाय !!

माधवी । क्या नरसिंह ही ने तुझ से कहा ?

नरसिंह । हाय ! यह दुष्टा कह देगी अब चलना चाहिये

माधवी । ठहर नीच तू कहां जाता है (माधवी को नरसिंह का और नरसिंह को माधवी का पिस्तौल मारना)

नरसिंह । हा......य (मरना)

माधवी । पर....मे....श्व....र (मरना)

॥ * दृश्य ३ रा * ॥

॥ वन ॥

(वधिकों का सुरेन्द्र को बंदी कर लाना और कमला के पति का बधिकों को पिस्तौल से मार सुरेन्द्र सिंह को छुड़ा ले जाना)

॥ * दृश्य ४ था * ॥

॥ होटल ॥

(मदन का आना)

मदन । आज अच्छा अवकाश मिला जो ससुर जी आते हैं आज मुझ से बचकर कहां जायेंगे । उस दिन मुझ को बड़ा छकाया था । (जाना, घसीटा सिंह का आना)

घसीटा। माधवी, नरसिंह अथवा तारा की जो दशा हुई सो तो कुछ आप लोगों से छिपी है नहीं मैंने भी सोचा कि अब किसी दूसरे देश में जाकर मोगल से डान्स कर पब्लिक को प्रफुल्लित करेंगे। मेरी स्त्री तो रोकर स्वर्ग धाम पधार गई और मैं यहां पधार आया। [बेरा का आना]

बेरा। कहिये महाशय। आप को कुछ आवश्यकता है।

घसीटा। हां भाई। कुछ थोड़ी रास्पबेरी ले आओ।

(बेरा का जाना)

घसीटा। हाय २ पर मूल्य कहां से दूंगा। अजी आने दो। तो फिर देखा जायगा॥

(५ जिन्टल मैन का आना)

घसीटा। आइये महाशय बैठिये कहिये आपका क्या नाम है और आप सज्जन कहांसे पधारे हैं ?

१ जि० मै०। हहाहा। हम लोग एक स्त्री के फेर में आये हैं।। यहां पर उसके नाम लौटरी डाली जायगी। जो जीतेगा सोही पावेगा यदि आपकी इच्छा हो तो आप भी अपना नाम लिखवा लीजिये पर १०० देना होगा।

घसीटा। रुपया इस समय मेरे पास नहीं है हां मैं एक चेक लिख दूंगा आपको दिवालिया बैंक से रुपया मिल जायगा।

२ जि० मै०। दिवालिया बैंक कहां है ?

घसीटा। डिस औनेस्ट रोड पर।

मदन। वाह २ आजकल कैसे २ बैंक खुलते हैं और कैसे २ डिपोजिटरम् होते हैं। मैं भली प्रकार समझता हूं कि यह कैसा चालाक है। पर यदि मैंने इसे न छकाया तो मेरा नाम भी नहीं। (प्रकाश) अच्छा जी तो लौटरी में इनका भी नाम लिख लीजिये।

(लाटरी डाली जाती है। और घसीटा सिंह का नाम आता है वो देख कर प्रसन्न होता है।)

घसीटा। वाह २ मैं तो जीत गया।

सब। और हम सब हार गये।

घसीटा। अब आप लोग जाइये मैं तो अभी थोड़ी रास्प बेरी पीऊंगा तब प्यारी को ले कहीं दूसरे देश में चला जाऊंगा।

मदन। क्यों महाशय आप थोड़ी मुझे भी देंगे।

घसीटा। हां। अवश्य। (बेरा रा० बे० लाता है सब पीते हैं। और नसे में हो कुर्सी पर लेट जाते हैं। घसीटा अवकाश पा मदन के जेब से नोट चुराता है और सोने का बहाना कर सो जाता है। मदन पसीने पोछने के बदले घसीटा सिंह के मुँह में स्याही पोत कर चला जाता है बेरा दाम लेने आता है और देख कर हँसता है)

घसीटा। क्यो वे मुंह क्यों बाता है। क्या बात है।

बेरा। हाः हाः हाः

घसीटा। नौनसेन्स बोलता क्यों नहीं (बेरा

सीसा लाकर दिखाता है घसीटा लजाता है)

घसीटा । हाय र यह दुष्ट ने क्या किया अच्छा भी रुपये तो हाथ लगे और लाटरी में एक सुन्दर बालिका भी पाया है बस अब चल दें ।

(घसीटा बेरा को मूल्य चुकाकर जाताहै)

॥ * दृश्य ५ वां * ॥

अन्तका राज्य दर्बार ।

(सुरेन्द्र सिंह, कमला, आनन्दसिंह, गोपालसिंह और दर्बारी गण का बैठे दिखाई देना ।)

सहेलियां । ओ प्यारे महाराजा दुलारे महाराजा ! सदा तुम सुख से रहो जी ।

दासी की बिनती यही, चेरी कि बिनती यही । सदा तुम

(१) जबलों गंग अरु जमुन को, जलधारा अरु नाम ।
तबलों सुखसों सुख करो, सिंहासन यहि ठाम ॥

(२) दीनानाथ दयाल को; हो जगदीश सहाय ।
बहु दिवश पश्चात् अब, सुख दिखायो है आय ॥

ओ प्यारे महाराजा ।

कमला । पिताजी; कृपा कर यह छत्र वो सिंहासन को जो बहुत दिवसों से आपसे पृथक कर दिया गया था आज पुनः ग्रहण कर सुशोभित करिये ।

सुरेन्द्र । बस ओ मेरे रक्त के सबसे स्वच्छ बूंद अब मेरा सिंहासन वह लकड़ी की रथी होगी जिसपर

मृत्य शरीर सुलाकर उस महाराज के दर्बार में लेजावेगी और मैं उस समय सुशोभित होऊँगा जब तू अपने निज हाथों से दो गज कफन इस शरीर पर डालेगी।

कमला। प्यारे पिता।

सुरेन्द्र। अपने पिता की आज्ञा, ध्यान दे यह वही दुष्ट हाथ है जिसने बल पूर्वक तेरा भाग छीनलिया था अब उसीका न्याय देख कि तेरा भाग अब तुझे लौटाता हूं।

आनन्द। प्रभो! आपकी लीला अपरम्पार है।

सुरेन्द्र। मेरे प्रिय मित्र! तुमने जो २ मेरी सेवकाई की हैं उनका फल मैं किसी प्रकार तुम्हे नहीं दे सकता।

आनन्द। प्रभो! आप इस सेवक को बार बार क्यों लजाते हैं केवल शोक के और मैंने आपकी क्या सेवकाई की? सदा याद रखने वाली सेवकाई तो प्रतिष्ठित श्रीयुत जीतसिंह जीने कीहै।

सुरेन्द्र। जीतसिंह, मेरा प्यारा, सच्चा स्वामिभक्त जीतसिंह, जो २ सेवकाई उसने मेरी की, क्या कोई कर सकता है कदापि नहीं। हा प्यारे जीत।

गोपालसिंह। महाराज जो ईश्वर की इच्छा थी वही हुआ।

सुरेन्द्र। आओ ऐ मेरे प्यारे बच्चों एक बार पुनः मेरे सम्मुख हाथ मिलावो।

[कमला का गोपालसिंह से हाथ मिलाना]

सुरेन्द्र। सदा रहे अहिवात तुम्हारा।

जबलों गंग जमुन जल, धारा ॥

॥ इति शुभम् ॥

॥ मेरी विनती ॥

पाठक गण !

आप लोगों को भूमिका से ज्ञात हुवा होगा कि यह नाटक बड़ी शीघ्रता में केवल १२ दिवस में लिखागया है इस हेतु सम्भव है कि इसमें कई प्रकार की त्रुटियां रहगई होंगी जिस हेतु मैं क्षमा का प्रार्थी हूं। यदि आपलोग मेरा साहस इसी भांति बढ़ावेंगे तो आप लोगों की सेवामें बहुतही शीघ्र " संसार स्वप्न " और " अद्भुत मुद्रिका " नामक नाटक अर्पण करूँगा।

विनीत--

" आनन्द